चन्दामामा
जनवरी १९९४
Rs 7

Parle-G

गिलि गिलि गप छू मन्तर,
कॅम्लिन खींच दे लाइन सीधी-समांतर

छोटा पाशा का जादू - कॅम्लिन रूलर. सीधी से सीधी लाइनें खींचना
छोटा पाशा के लिए अब बाएं हाथ का काम है.
मदद के लिए कॅम्लिन रूलर जो है! तभी तो,
उसका होमवर्क होता है हमेशा साफ़ सुंदर
और इनाम में रोज़ मिलता है टीचर का ढेर सारा प्यार.

camlin
तुम्हारा सच्चा साथी

Contract.CL.923.93.Hn

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

आज, बीते कल से बेहतर

हम पुनः नव वर्ष में प्रविष्ठ होने के लिए सन्नद्ध हैं । बहुधा लोग आश्चर्य प्रकट करते रहते हैं "समय किस वेग से दौड़ रहा है ।" उनकी बातों से ऐसा लगता हैं मानों कुछ दिनों के पहले ही उन्होने नव वर्ष का स्वागत किया हो ।

समय दौड़ता हैं, पर वह हमारे इर्द-गिर्द ही घूमता है! वह भविष्य से भूत को जोड़ता है । समय का एक विशिष्ट लक्षण यह है कि वह नापा जा सकता है ।इस विशिष्ट लक्षण का उपयोग करके अपने उज्वल भविष्य के लिए कुछ लोग अपने में अद्भुत शक्ति का उत्पादन करते हैं ।ऐसे लोग मानव की प्रगति में अधिकाधिक योगदान देते हैं ।

समय कभी भी स्थिर नहीं होता । वह सदा प्रवाहित होता रहता है । नदी की तरह, निरंतर प्रवाहित होनेवाले समय नामक इस प्रवाह का ना आदि है, ना अंत । समय शाश्वत है । वह कदापि परिवर्तित नहीं होता । फिर भी बारह महीनों की समाप्ति के उपरांत नव वर्ष आरंभ होता है और हम हृदयपूर्वक उसका स्वागत करते हैं । हम मानवों को, एक परिवर्तन चाहिये और यह परिवर्तन हम अपनी भलाई के लिए चाहते हैं । जब हम परिवर्तित होते हैं अथवा परिवर्तन की आकांक्षा रखते हैं, तो यह नव वर्ष हो जाता है ।

प्रश्न तो यह है कि क्या हम अपने जीवन-काल में इस परिवर्तन के लिए तीन सौ साठ दिनों तक प्रतीक्षा करें? क्या यह अच्छा नहीं होगा कि हर दिन हम परिवर्तन का निर्णय करें, जिससे हमारा विकास हो, हमारी प्रगति हो? हम निर्णय कर लें कि आज का दिन बीते कल से उत्तम हो ।

चंदामामा के पाठकों को नववर्ष की हार्दिक शुभाकांक्षाएँ

वर्ष : ४७ | जनवरी १९९४ | अंक : ५

एक प्रति : रु. ४/- | वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

समाचार–विशेषताएँ

नोबेल पुरस्कार विजेता, जो कभी दुश्मन थे

सबों की दृष्टि नारवे की राजधानी ओसियो पर केंद्रित है। यहीं नोबेल पुरस्कार समति की बैठक होती है और निर्णय लेती है। हर साल दिसंबर में ये पुरस्कार वितरित होते हैं। इस साल इस तारीख को संसार के गण्य मान्य व्यक्ति टी.वी. पर यह देखने व सुनने को उत्सुक हैं, क्योंकि इस ऐतिहासिक उत्सव में संसार के दो आदरणीय व प्रतिष्ठित व्यक्तियों को नोबेल पुरस्कार प्रदान किया जानेवाला है। ये हैं दक्षिण अफ्रीका के अध्यक्ष श्री एफ.डब्ल्यू. डे.किर्क और अफ्रीका के राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष श्री नेल्सन मंडेला।

एक समय था, जब ये दोनों कट्टर शत्रु थे। ऐसे कट्टर शत्रुओं को नोबेल पुरस्कार देने का निर्णय नोबेल समिति ने क्यों लिया? इतिहास के पन्नों को पलटने पर आपको मालूम होगा कि दक्षिण अफ्रीका ने एक सौ सालों से रंगभेद और जातिगत विभेद की नीति अपनायी। गोरे इस देश में स्थिर हो गये और सरकार चलाने में उनका ही आधिक्य रहा। इन्होंने काले लोगों पर बहुत से प्रतिबंध लगाये। यह बताने की ज़रूरत नहीं कि काले यहाँ के असली निवासी थे और उन्हीं की संख्या अधिकाधिक थी। फिर भी सरकार में उनका कोई स्थान नहीं रहा। उनको कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रखा गया। उन्हें अपने आर्थिक क्षेत्र में सुधार करने की कोई सुविधा नहीं दी गई। शिक्षा तथा सामान्य प्रगति करने की सुविधा से भी वे वंचित रखे गये। देश की संपत्ति व उन्नति में उन्हें किसी भी प्रकार से भाग लेने से अलग रखा गया। कब तक वे इस दमन को सहते रहेंगे? गोरों की इस दमन–नीति का ज़बरदस्त विरोध हुआ। उन्होंने न्याय, स्वतंत्रता तथा समानता की मांग की। नेल्सन मंडेला में उन्होंने एक ऐसे नेता को पाया, जो उनकी मांगों का सही प्रतिनिधित्व कर सकता है। १९६० में उन्होंने अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस की एक गोरिल्ला शाखा की स्थापना की। इसका लक्ष्य था प्रजातांत्रिक धर्म–निरपेक्ष दक्षिण अफ्रीका की स्थापना। जब उन्होंने आंदोलन का प्रारंभ किया, वे जेल में ठूँस दिये गये। उन्हें एक आतंकवादी करार दिया गया। उन्हें 'तनहाई तथा बेकार' के २७ साल जेल में गुज़ारने पड़े।

एक जाति के विरुद्ध आँख मूँदकर किये गये अत्याचारों का दर्पण है, जेल की सज़ा की उनकी यह अवधि। इसकी तुलना साधारणतया भारत में की गयी गांधीजी के अहिंसात्मक आंदोलन से की जाती है।

इस दरम्यान काले लोगों का आंदोलन चलता रहा। शासक भी बदलते रहे। श्री डे.किर्क, जो श्री मंडेला की तरह वकील थे, १९८९ में दक्षिण अफ्रीका के अध्यक्ष बने। दक्षिण अफ्रीका के बारे में उनका दृष्टिकोण ही भिन्न था। उन्होंने काले और गोरों के बीच जो कुत्सित नियम थे, तोड़ डाले। गोरों को ही जो सुविधाएँ प्राप्त थीं, समाप्त किये। सरकार में कालों को भी स्थान देने का निर्णय उन्होंने किया। कालों ने उनके इस निर्णय का स्वागत किया, लेकिन उन्होंने अपने नेता की रिहाई की मांग की। १९९० में यह घटना घटी।

किसी भी प्रकार की शत्रुता तथा द्वेष की भावना लिये बिना श्री नेल्सन मंडेला जेल से बाहर आये। उन्होंने स्पष्ट कहा कि २७ पहले जो मेरा ध्येय था, अब भी वही मेरा ध्येय है। उनका राजनैतिक लक्ष्य था "बहुसंख्यकों की सरकार बने, ना कि बहुसंख्यक कालों की सरकार।" गोरों की सरकार से उन्होंने तुरंत वार्तालाप शुरू किया। उनका प्रस्ताव था कि नया राजनैतिक दौर शुरू हो और यह शांतिपूर्वक हो। उनके इस प्रस्ताव के सिद्धांत थे—एक आदमी, एकमत।

यह वार्तालाप गोरों की सरकार तथा अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस में चलता रहा। काले लोगों की दूसरी संस्थाएँ इस वार्तालाप में शामिल हुई। फलस्वरूप दोनों में शताब्दियों से जो अविश्वास था, हट गया और यों प्रजातंत्र की स्थापना के लिए रास्ता खुल गया।

हाँ, शांति के इस प्रस्ताव को कार्यरूप में लाते हुए अनेकों अड़चनें आयीं, बहुत—सी दुर्घटनाएँ घटीं, हिंसात्मक आंदोलन हुए, फिर भी दोनों नेताओं ने दक्षिण अफीका में प्रजातंत्र की स्थापना के अपने प्रयत्न जारी रखे। उनके इसी प्रयत्न ने नोबेल समिति के सदस्यों का ध्यान आकृष्ट किया और व उससे अति प्रभावित हुए।

जब यह पुरस्कार घोषित हुआ तब श्री डे. किर्क ने कहा "यह बहुत बड़ा सम्मान है, और मैं इस प्रशस्ति को स्वीकार करता हूँ।" श्री मंडेला ने कहा "नोबेल पुरस्कार सारे दक्षिण अफ्रीका के लोगों के लिए सम्मान है।" केप टौन के आर्च बिषप डेज़मांड टुटु को भी यह पुरस्कार १९८४ में प्राप्त हुआ। उन्होंने बताया "दो विभिन्न व्यक्तियों को दिया गया यह सम्मिलित पुरस्कार बिलकुल उचित है।"

ऐसे दो नेता जब पुरस्कार को स्वीकार करने मंच पर आये, तब उन्हें देखकर किसकी आँखों में आनंद के आँसू नहीं उभर आयेंगे?

इस साल प्राप्त अन्य पुरस्कार विजेता

साहित्य : टोनी मोरिसन, अफ्रीकी अमेरेकन स्त्री— लोरियन के रचयिता, ओहियो, U.S.A

चिकित्सा शास्त्र : डा.रिचर्ड. जे. रोबर्टस. युनैटेड किंगडम, और डा. फिलिप ए. शार्प. U.S.A.

भौतिक शास्त्र : श्री रसल ए.हल्से और प्रो. जोसेफ हेच. टैलर, U.S.A.

रसायन शास्त्र : श्री कारी बी. मुल्लीस. यू.एस.ए और श्री मैकैल स्मिथ, कनाड़ा।

अर्थ शास्त्र : प्रो. रोबर्ट डब्ल्यू फोगेल और प्रो.डगलेस सी. नार्थ. U.S.A.

ग़ायब नौकरानी

सुँदरी धनवान सुकुमारी की सहेली है। वह ग़रीब अवश्य है, लेकिन कभी भी, किसी भी स्थिति में उसने किसी के सामने हाथ नहीं फैलाये। उसके आत्माभिमान ने उसे कभी भी ऐसा करने नहीं दिया। दोनों सहेलियाँ बिना किसी भेदभाव के मिलती जुलती थीं।

एक बार सुकुमारी के घर दूर प्रांत से गहनों का एक व्यापारी आया हुआ था। उसके पास क़ीमती और विशेष प्रकार के सुँदर से सुँदर गहने थे। गहनों के व्यापारी के साथ नलंद नामक एक युवक भी था। देखने में वह बहुत ही सुँदर था। उसकी रूप–रेखाएँ बड़ी ही आकर्षक थीं। वह बहुत ही चुस्त और प्रवीण था। बातें बड़ी ही मीठी करता था। अपनी हास्य भरी बातों से दूसरों का मन अनायास ही मोह लेता था। सुकुमारी का मन उसपर लट्टू हो गया। उसने उससे शादी करने की ठानी। वह सीधे उसी युवक से बातें करने से सकुचायी। उसने सहेली सुँदरी को बुलाया और अपनी इच्छा प्रकट की। उसने सुँदरी से कहा "गहनों का व्यापारी सराय में रहता है। कैसे भी हो, तुम वहाँ उस युवक से मिलो, और मेरे प्रेम की बात बताओ। उसने अगर मान लिया तो मेरे पिता को मनाना कोई कष्टतर कार्य नहीं है।"

उसी दिन शाम को सुँदरी सराय में नलंद से मिली। अपना परिचय स्वंय किया और अपनी सहेली सुकुमारी की मनोच्छा को व्यक्त किया।

नलंद सुँदरी को देखता ही रह गया। पूरा विवरण जानने के बाद उसने सुँदरी से कहा "तुम्हारी सुँदरता ने मुझ पर जादू कर दिया है। मैं होश–हवास खो बैठा हूँ। मैं शादी करूँगा तो तुम्हीं से करूँगा। ऐसा नहीं हो

मीना गुप्ता

अस्वीकृति पर वह नलंद पर नाराज़ भी हो गयी। पर कर क्या सकती थी? उसे "हाँ"कहना ही पड़ा।

सुँदरी और नलंद का विवाह संपन्न हुआ। वे दोनों गाँव छोड़कर चले गये। इसके कुछ दिनों बाद सुकुमारी की शादी उसी गाँव के एक धनवान से हो गयी।

कुछ साल गुज़र गये। सुकुमारी को मालूम हुआ कि सुँदरी अपने पति के साथ चक्रपुरी में रह रही है। उसे यह भी मालूम हुआ कि वे दोनों सुख–चैन से रह रहे हैं। वह ईर्ष्या से जल उठी। वह चाहती थी कि नलंद जान जाए कि मैं कितने वैभव और ऐशोआराम के साथ रह रही हूँ। उन्हें यह जतलाने के लिए ही सही, उसने सुँदरी के घर जाने का निश्चय किया। एक नौकरानी को अपने साथ लेकर वह चक्रपुरी गयी।

सुँदरी ने बड़े प्रेम से अपनी सहेली का स्वागत किया, उसका आदर–सत्कार किया।दूसरे दिन झूठी सहानुभूति जताते हुए उसने सुँदरी से कहा"बड़े दुख की बात है, तुम्हारे घर में कोई नौकरानी भी नहीं है।"

सुँदरी हँसती हुई बोली "नौकरानी हमारे घर में क्यों नहीं है? वह तुम्हें दिखाई दिये बिना सब काम किये जा रही है। देखा ना, हमारा घर कितना साफ–सुथरा है। तुम्हीं बताओ, अगर नौकरानी नहीं होती तो क्या यह संभव है?"

सहेली की इस बात से सुकुमारी में उत्सुकता और बढ़ गयी। उसने कड़ी नज़र

पाया तो मैं जान दे दूँगा।"

सुँदरी कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि ऐसा परिणाम होगा। वह घबराकर फौरन वहाँ से चल पड़ी। गहनों के व्यापारी ने दूर ही से उन दोनों की बातें सुनीं। उसने नलंद के पास आकर कहा "यह लड़की देखने में बहुत ही अक़्लमंद लगती है। अगर यह तुम्हारी पत्नी बनेगी तो तुम जीवन में और उन्नति करोगे। परंतु वह अपनी सहेली की बात बताने यहाँ आयी थी। तुम्हें ही स्वंय सुकुमारी से बात करनी होगी और उससे इस विवाह के लिये स्वीकृति लेनी होगी।"
दूसरे दिन नलंद सुकुमारी से मिला। जो कुछ हुआ, उसने पूरा–पूरा उसे बताया सुनकर सुकुमारी निश्चेष्ट रह गयी। उसकी

से देखा, फिर भी नौकरानी कहीं दिखायी नहीं पड़ी । चार दिन ठहरने के बाद उसने लौटने का निश्चय किया ।

जाने के पहले सुँदरी ने साड़ियों की एक गठरी सुकुमारी के सामने रखी और कहा "तुम्हारे आने से मैं कितनी खुश हुई, तुम नहीं जानती । इसमें से एक साड़ी लो, जो तुम्हें अच्छी लगे ।"

सुकुमारी ने तुरंत अपनी नौकरानी को बुलाया और कहा"इनमें से जो साड़ी तुझे अच्छी लगती है, चुन लेना ।" सुँदरी को उसके इस काम पर बेहद ताज्जुब हुआ तो सुकुमारी ने कहा" मेरे ओहदे के लायक साड़ी तो तुम दे नहीं पाओगी । ऐसी साड़ियाँ अगर मैं पहनूँ तो मेरी इज्ज़त मिट्टी में मिल जायेगी, मेरा मजाक उड़ाया जायेगा, इसीलिये मैने अपनी नौकरानी को ले लेने को कहा है ।"

इस घटना के चंद दिनों के बाद सुँदरी अपने मायके गयी । सुकुमारी उससे मिलने आयी । जाते–जाते उसने कहा"जाने के पहले अवश्य ही मेरे घर आना, खाना खाना और जो साड़ी मैं दूँगी , उसे लेना ।"

"ज़रूर आऊँगी । मैं भी अपने साथ अपनी नौकरानी को ले आ सकती हूँ ना?"सुँदरी ने पूछा ।

"ठीक है, मेरे घर आते समय नौकरानी को भी अवश्य ही अपने साथ लेती आना ।" कहती हुई सुकुमारी चली गयी ।

लौटने के पहले सुँदरी अकेले ही सुकुमारी के घर गयी । सुकुमारी ने जब पूछा कि

अपनी नौकरानी साथ क्यों नहीं लायी तो सुँदरी ने कहा "भला, उसे तुम्हारे घर कैसे साथ ले आऊँगी ।" सुकुमारी मन ही मन खुश हुई । उसे लगा कि उसकी सहेली ने उसके महत्व को, उसकी श्रेष्ठता को जान लिया है ।

भोजन करने के बाद साड़ियों की एक गठरी सुँदरी के सामने रख दी और सुकुमारी ने कहा"इनमें से जो साड़ी पसंद आये, ले लो । ये कोई मामूली साड़ियाँ नहीं हैं । मैं ऐसी ही साड़ियाँ पहनती हुँ ।"

सुँदरी ने उनमें से एक साड़ी चुन ली और कहा" मैने तुम्हें जो साड़ी दी, उसे तुमने अपनी नौकरानी को दे दिया । न्याय तो यही है कि तुम्हारी दी हुई साड़ी मैं अपनी नौकरानी

को दे दूँ। बुरा मत मानना।" सुकुमारी ताज्जुब होती हुई बोली "इतनी क़ीमती साड़ी अपनी नौकरानी को दे दोगी?"

"हाँ, मैं अपनी नौकरानी को अपने स्तर की ही साड़ी दूँगी" कहती हुई सुँदरी वहाँ से चली गयी।

सुकुमारी इस घटना को भुला ना सकी। मन ही मन वह जलती रही। उसे अच्छी तरह से मालूम हो गया कि सुँदरी ने उसका अपमान किया है, ईंट का जवाब पथ्थर से दिया है।

एक महीने बाद सुकुमारी का पति किसी काम पर चक्रपुरी जानेवाला था। सुकुमारी भी अपने पति के साथ चक्रपुरी गयी। जब पति अपने काम पर गया तो वह सुँदरी के घर आयी और दरवाज़ा खटखटाया।

सुँदरी ने दरवाज़ा खोला। उस समय वह कपड़े धो रही थी। बीच में आना पड़ा इसलिये उसके मुख पर पानी की बूँदे बिखरी पड़ी थीं। बाल भी बिखरे पड़े थे। विशेष बात तो यह कि उस समय वह सुँदरी की दी हुई साड़ी पहनी हुई थी।

"तुम्हारी नौकरानी को देखने आयी हूँ। क्यों? आज क्या वह काम पर नहीं आयी? उसके लिए लायी साड़ी को तुमने क्यों पहन रखा?" सुकुमारी ने व्यंग्य से पूछा।

सुँदरी मुस्कुराती हुई बोली "क्या अब भी तुम समझी नहीं? मैं वही नौकरानी हूँ। तुम्ही बताओ, अच्छा तो यही है ना कि अपना खाना खुद खाओ, अपना काम खुद करो। इसीलिए भगवान ने हमें शरीर के अंग प्रदान किये। उन्हें उपयोग में ना लाकर दूसरों से काम करानेवाले अपाहिजों के समान हैं।"

सुँदरी की अच्छाई और अक़्लमंदी की प्रशंसा करते हुए सुकुमारी ने कहा "ईर्ष्या और अहंकार ने तुम जैसी अच्छी सहेली से मुझे दूर कर दिया। मुझे माफ़ कर दो।"

हामी पत्र

चंद्र एक ग़रीब युवक है। उसे मालूम हुआ कि मायाराम के यहाँ गुमाश्ते की नौकरी ख़ाली है तो वह उसके यहाँ गया।

मायाराम ने चंद्र से कहा " यह सच है कि एक गुमाश्ते की मुझे ज़रूरत है।हर हफ़्ते एक दिन माल खरीदने के लिए मैं शहर जाता रहता हूँ। उस दिन जो बिक्री होती है, उसकी रक़म उस गुमाश्ते के ही पास होती है। इसके पहले दो गुमाश्तों ने मुझे धोखा दिया है।अगर तुम यह नौकरी चाहते हो तो अमानत के रूप में तुम्हे एक हज़ार रुपये मेरे पास जमा करने होंगे। ऐसा नहीं कर सकोगे तो दो तीन प्रतिष्ठित लोगों से तुम्हें अपनी सिफ़ारिश करवानी होगी और उनसे हामी पत्र दिलवाना होगा।"

उस दिन शाम को चंद्र, मायाराम को साथ लेकर सूद का व्यापार करनेवाले सियाराम के पास गया। उससे एक हज़ार रुपये का कर्ज़ माँगा।

उसपर सियाराम हँस पड़ा और बोला "तुम मेरे ही घर के नज़दीक की एक झोंपड़ी में रहते हो। मैं बहुत समय से तुम्हें जानता हूँ। मायाराम तुम्हें महीने में ज़्यादा से ज़्यादा दो सौ रुपये वेतन देगा। वह तुम्हें अपने परिवार को चलाने के लिए मुश्किल से काफ़ी होगा। मूल धन की बात छोड़ो, व्याज भी तुम चुका नही पाओगे। तुम्हें कर्ज़ देकर आफ़त मोल लेने केलिए मैं थोड़े ही कोई बेवकूफ़ हूँ। चलते बनो।"

तब चंद्र ने मायाराम से कहा "साहब, कर्ज़ के लिए किया गया मेरा प्रयत्न विफल हो गया। अब प्रतिष्ठित सज्जनों से हामी दिलवाने का प्रयत्न करूँगा।।" वह मायारम को ग्राम के प्रमुख गंगाराम के पास ले गया।

गंगाराम चंद्र को आश्चर्य से देखता रहा

और फिर बोला "अच्छा, तुम्हारा नाम चंद्र है । गली से गुज़रते हुए तुम्हें मैंने कई बार देखा है । मेरा नौकर भी कह रहा था कि दूसरे लड़कों की तरह ना ही तुम कोई झगड़ा मोल लेते हो, ना ही कोई बुरा कम करते हो । इसका यह मतलब नहीं कि मैं तुम्हारे लिए हामी पत्र लिखकर दूँ । मैं थोड़े ही तुम्हारा चाचा हूँ या मामा ।"

चंद्र बिना एक शब्द भी निकाले, मायाराम को लेकर गाँव के कोतवाल के पास गया ।सारा विवरण बताकर उससे प्रार्थना की कि आप मेरी तरफ़ से हामी दें ।

कोतवाल गुर्राते हुए बोला "अरे, अपने को क्या समझते हो? मैं पहाड़ हूँ । तुम केवल एक कंकड़ हो । तुम्हारी यह हिम्मत कि मुझी से हामी पत्र लिखने को कह रहे हो? अपनी ईमानदारी और सदव्यवहार की सिफ़ारिश करवाना चाहते हो?" लाल-पीले होते हुए उसने इशारा करके एक पुलिसवाले को बुलाया और कहा "यह अवश्य ही कोई होशियार अपराधी होगा । है ना?"

पुलिसवाले ने बताया "इसका घर तालाब ही के पास है । वहाँ के सब लोग कहते रहते हैं कि यह बहुत अच्छा लड़का है । आप जैसा समझते हैं वैसा यह कोई अपराधी नहीं है । बेचारा बेकार है ।"

सिपाही की बातों से कोतवाल थोड़ा शांत हुआ और बोला "तुम कुछ भी कहो । बेकार आदमी अधिक दिनों तक बिना चोर बने चुप रह नहीं सकता । इसपर निगरानी रखो ।" फिर उसने चंद्र से कहा "फ़ौरन यहाँ से चले जाओ । यहाँ सज्जनों का आना मना है ।"

रास्ते में चंद्र ने उससे कहा "महाशय, मैं अभागा हूँ । किसी से भी हामी दिलवा नहीं सका ।"

उसकी बातों पर मायाराम हँसता हुआ बोला "तुमने ध्यान नहीं दिया होगा । ना करते हुए उन तीनों ने तुम्हें हामी पत्र दिया है । तुम्हारे सद्गुणों की पूरी प्रशंसा की है । इससे बढ़कर मुझे और क्या चाहिये? कल ही तुम नौकरी पर लग जाओ ।"

विचित्र पुष्प
९

(उत्तुंग 'शताब्दिका' पुष्पों की खोज में निकला। अनजाने वह नागपुरी नामक प्रदेश में पहुँचा। पहाड़ी कबीले के काबूई ने उसका आदर किया और उसे राजा के पास ले गया। राजा ने उत्तुंग के साहस की प्रशंसा की और उससे वादा किया कि तुम्हारे साथ कुछ साहसी सिपाहियों को भेजूँगा। उस दिन शाम को राजकुमारी ने एक सिपाही को यह कहकर भेजा कि उत्तुंग को अपने साथ मेरे पास ले आओ)-बाद

सिपाही उत्तुंग को अपने साथ ले गया और एक विशाल कमरे में उसे ठहराकर उससे कहा "यहीं ठहरो, राजकुमारी को समाचार पहुँचाकर लौटता हूँ।" यह कहकर वह अंदर चला गया।

उत्तुंग वहीं ठहर गया। बग़ल में जो खिड़की थी, उससे उसने बाहर देखा। उस कमरे के नीचे बड़ा ही सुँदर बग़ीचा था। वह उसकी सुँदरता को निहारने लगा। तब सामने के द्वार से राजकुमारी अंदर आयी और बोली "तुम आ गये।?"

उत्तुंग ने जब मुड़कर उसकी ओर देखा तो राजकुमारी ने कहा "तुम फूलों को चाहते हो ना? पर तुम्हें कैसे मालूम कि मैं फूलों को बहुत चाहती हूँ। उन सुँदर फूलों को मैंने अपने कमरे में सुरक्षित रखा है। अब यह तो बताओ कि ये सुँदर फूल शाप-ग्रस्त कैसे हुए?"

राजकुमारी के इस प्रश्न पर उत्तुंग चौंक पड़ा। लेकिन क्षण भर में उसने अपने को

संभाल लिया और कहा "शाप? किसे राजकुमारी? 'शताब्दिका' पुष्प और शाप ग्रस्त?"

'मेरे पिताजी से तुमने जो कहा, वह थोडा-बहुत मैने सुन लिया है। अचानक भवन में जो सुँगंधि फैल गयी थी, उसके बारे में जब हमारे पिताश्री मंत्रियों से चर्चा कर रहे थे, उस समय मैंने वहाँ प्रवेश किया। पिताश्री के हाथों में फूल जो थे, उनसे सुँगंधि फैल रही थी। काबूई उस समय कह रहा था कि इन फूलों के लिए राक्षस जंतु आयेगा। तो छिपकर मैने उसकी बातें सुन लीं। और तुम्हारी भी बातें सुन लीं। मुझे मालूम नहीं था कि राक्षस जंतु भी इन फूलों पर इतना मुग्ध है।" अपनी आँखें घुमाती हुई राजकुमारी ने कहा।

उत्तुंग की भी समझ में नहीं आया कि क्या जवाब दूँ और क्या ना दूँ। थोड़ा-सा तुतलाते हुए उसने कहा "हाँ, हाँ, फूलों से मुझे भी बड़ा चाव है। लेकिन मैं राक्षस जंतु नहीं हूँ।"

"किसने कहा कि तुम राक्षस जंतु हो। लेकिन हाँ, तुम राक्षस जंतु की खोज में निकले साहसी वीर हो। है ना?" हँसती हुई राजकुमारी ने पूछा।

"आप ही के लिए ये पुष्प ले आया हूँ राजकुमारी। मेरा विश्वास कीजिये।" उत्तुंग ने कहा।

"विश्वास करने का ही प्रयत्न कर रही हूँ" कहती हुई संदेहात्मक दृष्टि से राजकुमारी ने उत्तुंग को देखा।

उत्तुंग ने पूछा "अब तक आपने बताने का कष्ट नहीं किया कि मैं यहाँ क्यों बुलाया गया हूँ?"

"तुम राक्षस जंतु का नाश करने के लिए जा रहे हो। हम भी राक्षस जंतु जैसे एक शत्रु का सामना करने के लिए तुम्हारी मदद माँग रहे हैं" राजकुमारी ने कहा।

"राजकुमारी, शत्रु और आपके? काबूई ने तो कहा कि नागपुरी का कोई शत्रु ही नहीं।" उत्तुंग ने आश्चर्य से पूछा।

"काबूई ने जो कहा, सच है। बाहर से नागपुरी का कोई दुश्मन नहीं है। हमारे ही बीच में एक शत्रु मौजूद है" चिंतित राजकुमारी ने कहा।

पिताश्री ने मुझे और मेरी माताश्री को चेतावनी दी और बताया कि उससे हम जागरूकता के साथ बरतें ।"

उत्तुँग ने पूछा "तो अब सेनाधिपति कौन हैं?"

"दुर्जय सेनाधिपति है ।चूँकि कोई पुत्र नहीं है, इसलिए मेरे पिताश्री की तीव्र इच्च्छा है कि मुझे इस देश की रानी बनाऊँ । मेरे पिताश्री सदा प्रजा-क्षेम के बारे में ही सोचते रहते हैं । उन्हें भय है कि नागसिंह से प्रजा का कोई अहित ना हो; वह कहीं राज्य-शांति में खलल ना पहुँचाये । यह बात मुझे मेरी माताश्री से मालूम हुई" राजकुमारी ने कहा ।

"जो राजा सदा अपनी प्रजा के कल्याण के ही बारे में सोचते हैं, उनका कोई भी बाल बांका नहीं कर सकता । सैनिकों से भी, अधिक प्रजा ही उनकी रक्षा कर सकती है । आप यह तो बताइये कि अब वह नागसिंह कहाँ है?" उत्तुँग ने सवाल किया ।

"मेरे पिताश्री की सलाह पर, सेनाधिपति ने उसे कुछ सैनिकों के साथ देश के उत्तरी सरहद की रक्षा के लिए भेजा है । उसके बारे में हर दिन समाचार मालूम होते रहते हैं । फिर भी मेरी माताश्री की आशंका है कि वह चुप नहीं बैठेगा, सिंहासन की प्राप्ति के लिए वह कोई ना कोई षड़यंत्र रचेगा । यह बात बताने के लिए ही मैने तुमको यहाँ बुलवाया है । अच्छा यही होगा कि तुम कुछ दिनों के लिए यहीं ठहरो ।" राजकुमारी ने

उत्तुँग के मुखड़े पर प्रश्न चिन्ह अंकित था कि वह कौन है? यह जानकर राजकुमारी ने कहा "वह और कोई नहीं है । हमारा ही मामा नागसिंह है । हमारे पिताश्री ने उसे सेना में दलपति बनाया है । अपने इस ओहदे से वह संतृप्त नहीं है । वह सेनाधिपति बनने का सपना देख रहा है । मेरी माता के द्वारा उसने मेरे पिता को यह समाचार पहुँचाया है । मेरे पिता इसके लिए राज़ी नहीं हुए । इसपर क्रोधित होकर मेरे मामा अपने सहयोगियों से कहने लगे "सेनाधिपति क्या, मैं चाहूँ तो इस राज्य का राजा भी बनूँगा ।" यह जानकर मेरे पिताश्री ने यह कहकर उसे सावधान कर दिया कि आगे से राजप्रासाद में क़दम भी मत रखना । मेरे

उससे प्रार्थना की ।

"ऐसा ही होगा राजकुमारी, मैं एक प्रधान कार्य पर दूर प्रांत जा रहा हूँ । महाराजा ने भी बचन दिया है कि इस काम में वे भी मुझे सहायता पहुँचायेंगे" उत्तुंग ने कहा ।

"हाँ, यह बात मैं जानती हूँ । लेकिन याद रहे, किसी को यह मूलम होनी नहीं चाहिये कि नागसिंह की बात मैने तुमसे की है । कोई नया समाचार मालूम पड़ा तो तुम्हें सूचित करूँगी । अब तुम जा सकते हो ।" राजकुमारी ने कहा ।

सिपाही के साथ उत्तुंग अतिथिगृह में लौटा । वहाँ काबूई उसकी प्रतीक्षा कर रहा था ।उसके पूछने के पहले ही उत्तुंग ने कहा "राजकुमारी ने 'शताब्दिका' पुष्प के बारे में विवरण माँगे । लगता है कि हमने राजा से जो बातें कही थीं, उनमें से कुछ बातें उन्होने सुनी हैं । मैंने उनसे इतना ही कहा है कि वह पुष्प सौ सालों में एक बार खिलनेवाला सुँदर पुष्प है ।

काबूई ने उसकी तारीफ़ करते हुए कहा "तुमने अच्छा किया ।" दूसरे दिन सबेरे सिपाही उन्हें लेने आया तो उत्तुंग और काबूई राजा का दर्शन करने निकले । उन्हें देखते ही राजा ने काबुई से कहा "जैसा हमने कल सोचा था, दलपति नागसिंह के साथ कुछ सैनिकों को इसके साथ भेजूँगा । नागसिंह हमारे देश की उत्तरी सीमाओं में है । उसके पहुँचते-पहुँचते दो-तीन दिन लगेंगे । तब तक उत्तुंग यहीं रहे । तुम चाहो तो अपनी बस्ती लौट सकते हो ।"

काबूई ने राजा को विनयपूर्वक नमस्कार किया और बिदा लिया । उत्तुंग को अतिथि गृह में छोड़कर वह अपनी बस्ती की ओर निकल पड़ा ।

भोजन हो जाने के बाद उत्तुंग नगर की विचित्रताएँ व खासियतों को देखने निकला । नगर की बीथियाँ साफ-सुथरी थीं । वहाँ के भवनों को देखकर वह आश्चर्य में डूब गया । उत्तुंग को लगा कि यह नगर बहुत ही सुशोभित है, यहाँ के वासियों को किसी बात की कमी नहीं, यहाँ सुख-शांति व्याप्त है । वह सोचने लगा कि नागसिंह के षडयंत्र के कारण उस देश पर कोई आपदा टूट पड़े तो इसका क्या हाल होगा । वह
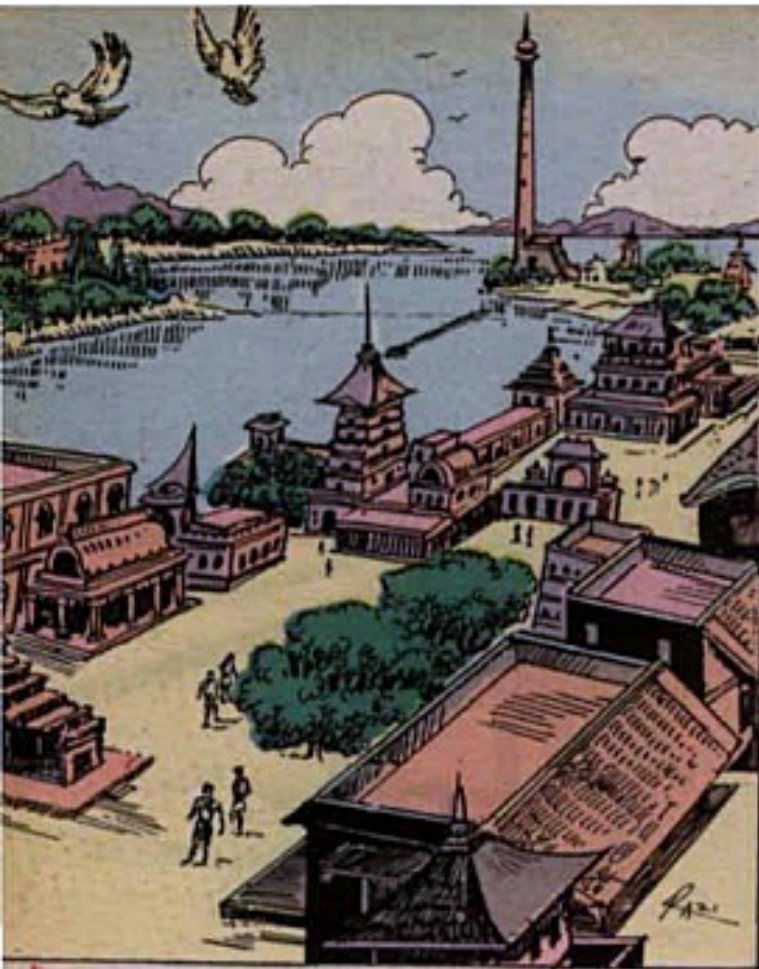
शाम तक अपने अतिथि-गृह में पहुँच गया । यों दो दिन गुज़र गये । तीसरे दिन शाम को एक सैनिक आया और उसने उत्तुंग से कहा कि राजकुमारी ने आपको बुलावा भेजा है । वह उस सैनिक के साथ राजभवन गया । उसी की प्रतीक्षा करती हुई राजकुमारी ने उसे देखकर कहा "मेरे मामा नागसिंह राजधानी पहुँचने ही वाला है । तुमको उससे बहुत ही सावधान रहना होगा । तुम यह जानने की कोशिश करो कि वह हमारे राज्य को हस्तगत करने का क्या कोई षडयंत्र रच रहा है? अगर उसे मालूम हो जाए कि तुम राजा के विश्वासपात्र आदमी हो तो किसी भी हालत में अपना रहस्य खुलने नहीं देगा । जब तुम्हारी यात्रा सफल होगी, तब तुम सीधे माणिक्यपुरी चले जाओगे या यहाँ आने का प्रयत्न करोगे?"

'अवश्य यहाँ आऊँगा ।राजकुमारी, यहाँ की परिस्थितियों को दुरुस्त करके ही अपने यहाँ जाऊँगा" उत्तुंग ने कहा ।

"तुम अगर चतुराई से नागसिंह की योजनाओं को जान जाओगे तो उसकी योजनाओं को सुगमता से विफल करने में सफल हो जाओगे ।यह बात बताने के लिए ही मैने तुमको यहाँ बुलाया है । अब तुम जा सकते हो ।" कहकर राजकुमारी अंदर चली गयी ।

उत्तुंग अपना अतिथि गृह लौटा ।

उसी दिन उत्तरी सरहदों से दलपति नागसिंह लौटा और सीधे सेनाधिपति दुर्जय के पास गया । उसे प्रणाम किया और कहा "क्या जान सकता हूँ, अचानक मैं यहाँ क्यों बुलाया गया हूँ?" ।

दुर्जय ने उससे कहा "उत्तुंग नामक एक युवक माणिक्यपुरी से चंद पुष्प ले आया है ।राजा ने निर्णय किया है कि तुम अपने नेतृत्व में कुछ सिपाहियों को लेकर उसके साथ जाओगेऔर उसे सहायता पहुँचाओगे ।"

"वह तो बड़ा पराक्रमी है । जब इतनी दूर अकेले ही चला आया है तो, और आगे जाना उसके लिए मुश्किल काम थोड़े ही है?" व्यंग्य भरे स्वर में नागसिंह ने कहा ।

"तुमने सच कहा । उसने तो अकेले ही जाने का निश्चय किया है । वह यहाँ हमारी

सहायता की आशा लेकर नहीं आया। लेकिन वह एक राक्षस जंतु की खोज में जा रहा है। सुना है कि वह राक्षस जंतु माणिक्यपुरी में घुसकर वहाँ की जनता पर भयंकर अत्याचार कर रहा है। उसे उस तरफ़ आने से रोकने और उसका निवास-स्थल ढूँढ़ने, वह साहसी युवक उत्तुंग 'शताब्दिका' पुष्प लेकर निकला है। हमारे राजा उससे बहुत ही खुश हैं। क्योंकि प्रजा की भलाई के लिए अकेले ही वह चल पड़ा है। उसके धैर्य-साहस पर राजा बहुत ही मुग्ध हो गये, इसलिए वे चाहते हैं कि उसके साथ तुम्हारे नेतृत्व में हमारे कुछ सैनिक भी भेजे जाएँ।" सेनाधिपति ने पूरा विवरण दिया।

नागसिंह थोड़ी देर मौन सोचता रहा और फिर बोला "आपने कैसे विश्वास कर लिया कि पहाड़ी जाति का एक युवक अकेले ही राक्षस जंतु की खोजमें निकल पड़ा है?"

सेनाधिपति ने कहा "माणिक्यपुरी से अकेले ही निकले उस युवक की बातों का, भला हम कैसे और क्यों विश्वास ना करें? भूलना नहीं कि यह राजा की आज्ञा है। उसे अमल में लाना हमारी जिम्मेदारी है।"

"आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। कहिये, मैं उस युवक से कब मिल सकता हूँ?" नागसिंह ने पूछा।

"कल। इसी समय यहीं मिल सकते हो। अब तुम जा सकते हो" सेनाधिपति ने दृढ़ स्वर में कहा।

नागसिंह चिढ़ता हुआ वहाँ से चला गया। दूसरे दिन सबेरे राजा ने सेनाधिपति को आने के लिए बुला भेजा। सेनाधिपति तुरंत राजभवन पहुँचा। राजा बहुत ही गंभीर दीख रहा था। राजकुमारी आँसू बहा रही थी।

सेनाधिपति ने बड़ी आतुरता से पूछा "क्या हुआ महाराज?" "शताब्दिका पुष्प ग़ायब हो गये हैं। राजकुमारी ने जिन फूलदानों में उन्हें सुरक्षित रखा, उनमें से पुष्प ग़ायब हो गये हैं। राजकुमारी के अंतःपुर में प्रवेश करके इतना दुत्साहस किस दुष्ट ने किया होगा? उन फूलों की सुगंधि ने सब दासियों को अवश्य ही आकर्षित किया होगा, लेकिन

मैं नहीं समझता कि किसी दासी ने यह काम किया है ।परंतु उनमें से कोई भी दासी इस संबंध में कुछ कहने से इनकार कर रही हैं । राजकुमारी ने स्वयं देखा कि वे पुष्प ग़ायब हैं । किसी ने भी उसे यह बात पहले नहीं बतायी । लगता है कि चोरी बड़ी ही होशियारी से की गयी है । पता नहीं चलता कि यह चोरी किसने की?" राजा बहुत ही आकुल होकर बोला ।

"राजभवन को भली-भांति जाननेवाले ही ने यह काम किया होगा । क्योंकि राक्षस जंतु का, राजभवन में आने की गुँजाइश ही नहीं" सेनाधिपति ने अपना संदेह व्यक्त करते हुए कहा ।

राजकुमारी ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा "राक्षस-जंतु? राजभवन में राक्षस जंतु? मेरी समझ में नहीं आता कि आप क्या कह रहे हैं?"

राजा ने दखल देते हुए कहा "घबराओ मत बेटी, वह बात मैं बाद बताऊँगा ।" फिर उसने सेनाधिपति से कहा "अब हमें सोचना चाहिये कि ये पुष्प हमें कैसे प्राप्त होंगे?"

"इस काम पर अभी सैनिकों को भेजता हूँ प्रभू । वे जहाँ कहीं भी हों, सुँगंधि तो फैलाते रहते हैं इसलिए जान जाना सुलभ होगा । अलावा इसके, यह भी पता लगाऊँगा कि कल से कौन-कौन राजभवन में आते-जाते रहे हैं ।" थोड़ी देर रुककर फिर बोला "महाराज, कल ही हमारा दलपति नागसिंह आया था । सैनिकों सहित उत्तुंग के साथ जाने केलिए अपनी सम्मति भी दे चुका है ।" सेनाधिपति ने कहा ।

"नागसिंह आ गया? कल से राजधानी में ही है? शाबाश, इसीलिए शायद विचित्र घटनाएँ घट रही हैं ।" राजा थोड़ी देर तक सोच में पड़ गया और फिर बोला "पहले आप फूल ढूँढ़िये और पता लगाइये । बाद हम निर्णय करेंगे कि उत्तुंग को कब निकलना है?"

-सशेष

महिमावान अंगूठियाँ

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया । पेड़ से यथावत् लाश को उतारा और कंधे पर ड़ाल लिया । श्मशान की तरफ़ मौन बढ़ने लगा । तब शव केअंदर के बेताल ने कहा "राजन, घनघोर अंधेरा है । भूत-प्रेतों का निवास-स्थान है यह श्मशान । फिर भी बिना किसी भय के अकेले ही चले जा रहे हो । अपने कार्य की सिद्धि के लिए निर्भीक होकर कठोर परिश्रम कर रहे हो । तुम्हारी कितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है । तुम्हारा अभिनंदन किये बिना मुझसे रहा नहीं जाता । लेकिन ज़रा बताओ तो सही, यह कठोर परिश्रम किसलिए, किसके लिए और आखिर क्यों? मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि तुम यह सब कुछ क्यों कर रहे हो? इतनी बड़ी आफ़त क्यों मोल ले रहे हो? किसी दिन तुम्हें अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफलता मिल भी जाए तो स्मरण रखना कि तुम अनंगदेश की राजकुमारी

बेतालकथा

अवंती की तरह बुद्धिहीन व अनुभवशून्य की तरह व्यवहार ना करना । तुम सावधानी से बरतो, इसके लिए मैं तुम्हें उस राजकुमारी की कथा सुनाऊँगा, जिसे तुम ध्यान से सुनो । यह कहानी सुनते-सुनते अपनी थकावट भी दूर करो ।" फिर बेताल ने यों कहना शुरू किया ।

अनंग देश के एक पहाड़ी प्रांत में तीन क्षत्रिय युवक थे । उनके नाम थे—जय, विजय और अजय । तीनों ने यौवन में पदार्पण किया । जहाँ जाते, तीनों मिल-जुलकर जाते थे । तीनों जिगरी दोस्त थे ।

एक दिन तीनों पहाड़ पर स्थित शिवालय में मिले । "हमारे माँ -बाप हमसे कोई भी काम करा नहीं रहे हैं । हम तीनों समय पर खा-पी रहे हैं । इसके अलावा हम कोई काम ही नहीं कर रहे हैं । रोज़मर्रे के बेकार कामों से हम ऊब गये हैं । हमको तो कोई उपयोगी काम करना चाहिये । कब तक हम इस प्रकार निरर्थक जीवन बिताते रहें?" जय ने कहा ।

"तुमने सही बताया । हम पढ़े-लिखे हैं ।हममें शक्ति-सामर्थ्य है । लेकिन क्या फ़ायदा? हमसे किसी को भी कोई मदद नहीं मिल रही है, हमसे किसी भी प्रकार का कोई भी लाभ किसी को भी नहीं मिल रहा है ।" विजय ने बड़े दुख से कहा ।

"निकट भविष्य में हमारा विवाह भी हो जायेगा । तब इस प्रकार घूमने-फिरने की स्वतंत्रता से हम वंचित हो जाएँगे । उसके पहले ही हमें चाहिये कि हम कोई ऐसे कार्य करें, जिनसे दूसरों की मदद हो, लाभ पहुँचे," कमर में लटकती हुई तलवार पर हाथ रखते हुए अजय ने बड़ी गंभीरता से कहा ।

मंदिर के पुजारी ने, जो उन्हें प्रसाद देने आया था, उनकी सारी बातें सुनीं । वह उनकी बातों पर मुस्कुराया और कहा "तुम लोगों के विचार प्रशंसनीय हैं ।उपयोग में ना लायी जानेवाली तलवार और सोच सकनेवाली बुद्धि को उपयोग में ना लाने से जंग लग जाता है । अब रहा महत्वपूर्ण कार्य । निस्वार्थ होकर अन्य लोगों की सेवा का हर कार्य महत्वपूर्ण ही होता है । आसपास के जंगलों में एक बाघ स्वच्छंद होकर घूम रहा है । वह भेड़ों और बकरियों को उठाकर

ले जा रहा है । उनके रखवाले भयभीत हैं । तुम तीनों साहस के साथ आगे बढ़ो और उस बाघ को मारकर इस गाँव का कल्याण करो ।"

"बाघ को मारना तो हमारे बायें हाथ का खेल है । इस काम में भला आखिर कितना साहस चाहिये? बड़े से बड़े राक्षस की भी हम ऐसी-तैसी कर देंगें ।"तीनों ने मुक्त कंठसे कहा और वहाँ से चल पड़े ।

दूसरे दिन प्रातःकाल सूर्योदय से पहले ही वे जंगल पहुँचे । दुपहर तक उन तीनों ने जंगल छान ड़ाला, लेकिन कहीं भी बाघ का नामोनिशान नहीं मिला । वे निराश हो गये । जो फल मिले, उन्हें वे खाते गये । प्रपात का जब वे पानी पीने लगे तब उन्हें एक आर्तनाद सुनायी पड़ा । यह आर्तनाद पास की किसी पहाड़ी गुफ़ा से आ रहा था । उस आर्तनाद से स्पष्ट मालूम हो रहा था कि कोई मानव संकट की स्थिति में हैं ।

तीनों ने सोचा, इस बार बाघ बकरी को नहीं, बल्कि किसी इन्सान को ही खानेवाला है ।वे तीनों उस तरफ़ दौड़ पड़े । जब वे गुफ़ा तक पहुँचे तब उन्होने देखा कि एक बड़ा साँप फन फैलाते हुए, फुफकारते हुए बाहर आ रहा था । तीनों ने वार किया और साँप टुकड़ों में कट गया ।

अब उन्हें गुफ़ा से एक आदमी की कराह सुनायी पड़ी । तीनों अंदर गये । उन्होने देखा कि मध्य आयु का साधु जीवन और मरण से संघर्ष कर रहा है ।

मरणावस्था में पड़े हुए उस साधु ने कहा "लालच के बश होकर हिमालय पर्वतों से यहाँ आया था । पुत्रो, मैं साधु हूँ, लेकिन मुझमें सांसारिक सुख भोगने की इच्छा जगी ।अपने गुरु से तीन महिमावान अंगूठियों की मैंने चोरी की और यहाँ भाग
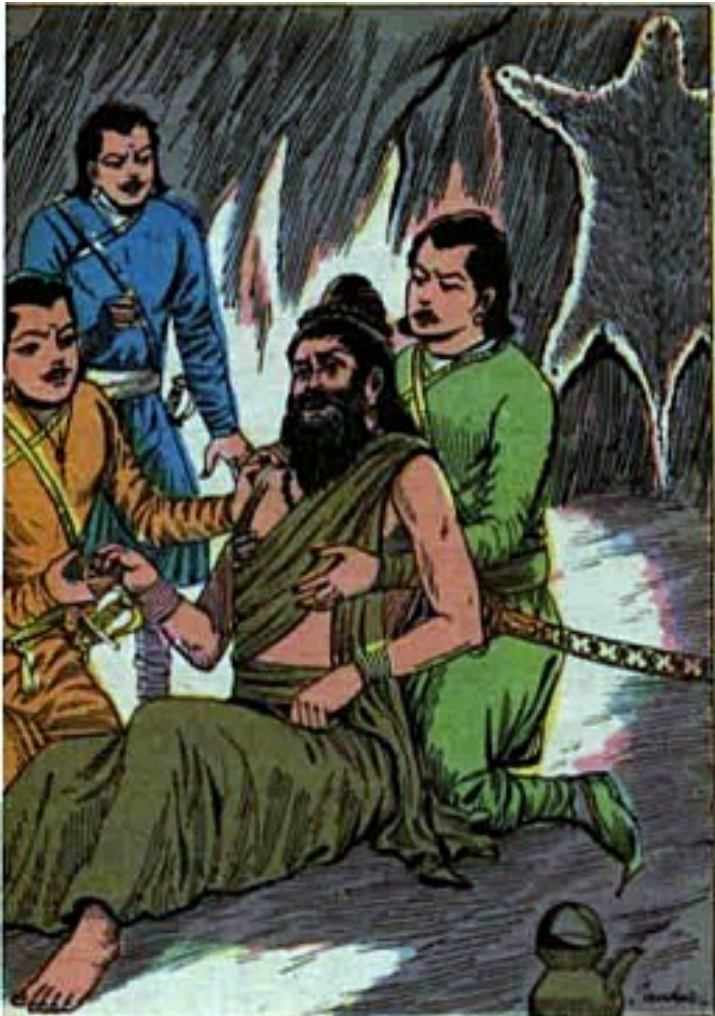
आया हूँ । कालसर्प ने मुझे ड़सा है । मरने के पहले ये अंगूठियाँ तुम लोगों के सुपुर्द कर रहा हूँ । इनमें से लाल पथ्थर की एक अंगूठी है ।उसे उँगली में ड़ालने पर समयानुकूल अच्छे विचार उत्पन्न होंगे ।दूसरी अंगूठी हरे पथ्थर की है ।इसे ड़ाल लेने पर मालूम होगा कि इन विचारों को कब और कैसे कार्यान्वित करना है और किस प्रकार की सफलता प्राप्त हो सकती है । तीसरी अंगूठी नीले रंग की है । इसे पहनने पर ऐसी शक्ति लब्ध होगी, जिससे मेरे पूर्व कहे हुए सब काम सफलता से पूर्ण होंगे । तुम तीन हो और तीनों एक-एक अंगूठी लो ।" लाल पथ्थर वाली अंगूठी जय को, हरी पथ्थरवाली अंगूठी विजय को और नीली पथ्थरवाली अंगूठी अजय को देकर साधु मर गया ।

पहाड़ी प्रांतों से उन तीनों ने चंदन की लकड़ियाँ इकट्ठी कीं और उनसे साधु का दहन-संस्कार किया ।

उस रात को वे तीनों सो नहीं पाये । उन्हें नींद ही नहीं आती थी । हर कोई यही सोचने लगा कि ये अंगूठियाँ राजा के पास हों तो देश के कल्याण में सहायक बनेंगी । हमारे पास होने से क्या फ़ायदा? उन्होने निर्णय किया कि इन अंगूठियों को उपयोग में लाने के सच्चे हक़दार राजा ही हैं । वे सबेरे-सबेरे घोड़ों पर बैठकर उन अंगूठियों को राजा को पुरस्कार में समर्पित करने राजधानी चल पड़े ।

जय पहले राजा से मिला और कहा "महाराज, मेरे पास एक महिमावान अद्भुत अगूठी है । देश की उन्नति के लिए जिन श्रेष्ठ विचारों की आवश्यकता है, वे विचार इसे पहनने पर आपके मस्तिष्क में उत्पन्न होंगे । यह मुझ जैसे एक साधारण नागरिक के पास होने के बजाय, यह आप जैसे राजा के पास हो तो जनता की और भलाई हो सकती है । आपको यह समर्पित करते हुए मुझे असीम आनंद हो रहा है ।"

'मुझे खुशी है कि तुमने मुझे इतना मूल्यवान पुरस्कार दिया ।मेरी इच्छा है कि तुम मेरे यहाँ कुछ दिनों तक अतिथि बनकर रहो ।" राजा ने कहा ।

थोड़ी देर बाद विजय वहाँ आया और राजा को दूसरी अंगूठी देता हुआ बोला

"महाराज, इस अंगूठी की महिमा से आप जान पायेंगे कि आपमें जो-जो विचार उत्पन्न होते हैं, उन्हें कैसे कार्यान्वित किया जाए। उन्हें कार्यान्वित करने पर अच्छे परिणाम निकलेंगे, जिससे प्रजा का हित होगा।"

राजा ने विजय से भी अपने यहाँ कुछ दिनों तक अतिथि बनकर रहने का आग्रह किया।

अजय भी वहाँ आया। नीले रंग की अंगूठी देते हुए उसने राजा से कहा "राजन्, इस अद्‌भुत अंगूठी को आपको समर्पित कर रहा हूँ। इस अंगूठी से जनता के हितों के संबंध में जो विचार आपके मस्तिष्क में उत्पन्न होंगे, उन्हें सुगमता से कार्यान्वित करने की क्षमता, शक्ति व सामर्थ्य आपको प्राप्त होंगे।"

राजा को लगा कि यह अंगूठी दूसरी अंगूठियों से महिमावान है। उसने अजय को भी अपने यहाँ अतिथि के रूप में रहने की इच्छा प्रकट की।

अवंती राजा की इकलौती पुत्री है। राजा शीघ्र ही उसका विवाह करना चाह रहे हैं। वे सोच रहे हैं कि विवाह के उपरांत दामाद को राजा बनाएँ और राज्याभिषेक करें। लेकिन राजकुमारी को किसी भी राज्य का राजकुमार पसंद नहीं आ रहा था।

जब राजा किसी राजकुमार की चर्चा करते तो वह कहती "मुझे तो लगता है कि वे तो मुझसे अधिक मेरे राज्य को चाहते हैं। उनकी दृष्टि मुझपर नहीं बल्कि राज्य पर केंद्रित है। जिसे मैं चाहती हूँ, उससे मेरा विवाह हो, यह मुख्य नहीं। मुख्य तो यह है कि प्रजा उसे चाहे। वह मुझसे भी अधिक राज्य को और राज्य के हितों को

चाहे । ऐसे राजकुमार से ही मैं विवाह करूँगी" ऐसी अस्पष्ट बातें करती हुई वह विवाह स्थगित करती जाती थी ।

उस दिन संध्या को राजा राजकुमारी के कक्ष में गये । अपने साथ वे तीनों अंगूठियाँ भी ले गये और उनकी महिमा भी सविस्तार बतायी । उन्होने कहा "बेटी, ये तीनों युवक सुँदर हैं, अक़्लमंद हैं । साहसी हैं । उन्होने ही ये तीनों अंगूठियाँ मुझे भेंट में दी हैं ।"

"वे तीनों योग्य हैं । वे हमारे राज्य का कल्याण चाहते हैं । उनकी दी हुई अंगूठियाँ उन्हें लौटाना चाहता हूँ ।उनमें से, किसी को पसंद करो और शादी करो तो मेरा मन शांत होगा" राजा ने कहा ।
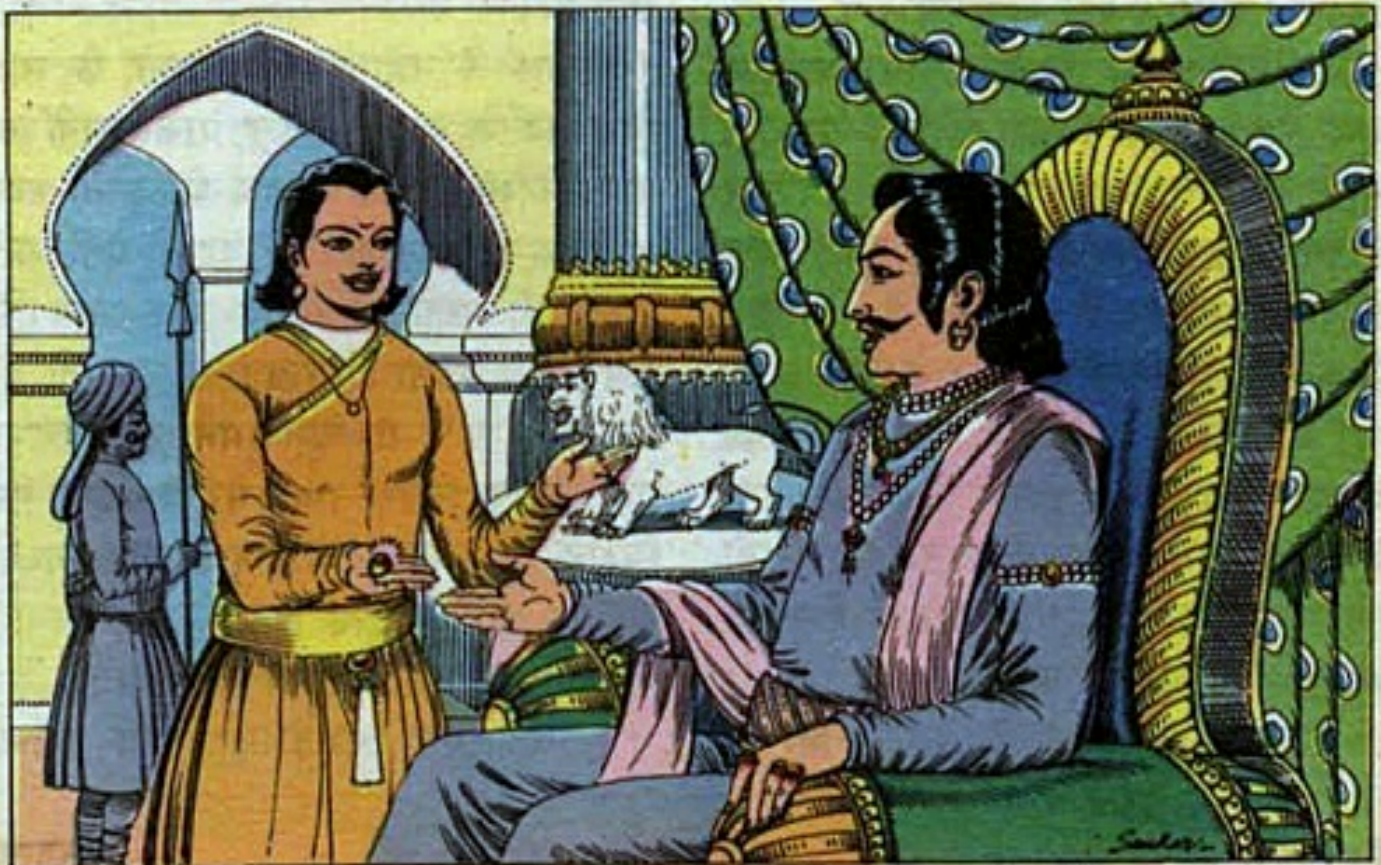
"उनके क्या विचार हैं, यह जानना भी तो आवश्यक है" अवंती ने कहा ।

राजा इस बात पर संतुष्ट हुए कि विवाह करने से उसने मना नहीं किया तो उन्होंने अपनी बेटी से कहा "पहले अपने विचार व्यक्त करो ।उन तीनों में से किससे तुम विवाह करना चाहती हो?"अवंती ने लज्जा से सिर झुकाकर कहा "पिताश्री, आप तो उनकी अंगूठियाँ लौटानेवाले हैं । मैं तो चाहती हूँ कि लाल पथ्थर वाली अंगूठी के जय से ही मेरा विवाह कीजिये ।"

राजा ने कोई और प्रश्न नहीं किया । उन्हें इस वात की खुशी थी कि पुत्री के विवाह की जटिल समस्या हल हो गयी । उन्होने पुत्री का विवाह जय से किया और उसे राजा बनाया ।

जय जैसे ही अंगदेश का राजा बना, विजय को मंत्रिपद दिया और अजय को सेनाधिपति बनाया ।

बेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद विक्रमार्क से कहा "राजन, राजकुमारी का जय को अपने पति के रूप में चुनना क्या अविवेक नहीं कहलायेगा? वह तो ऐसी बातें करती थी मानों हर मानव के स्वभाव को उसने खूब परखा हो । वह तो समझती भी कि हर राज्य के राजकुमार की दृष्टि उसपर नहीं, बल्कि उसके राज्य पर है ।इसीलिए विवाह के प्रस्ताव को अस्वीकार करती आयी । तो फिर तुम्ही कहो, जय से विवाह करने के लिए वह क्यों सन्नद्ध हो गयी?"

"उसके पास क्या प्रमाण है कि उसकी

दृष्टि उसके राज्य पर नहीं? वह उससे भी अधिक सिंहासन ही चाहता है? यह भी मान लिया कि उन तीनों में से किसी एक से विवाह करने की स्थिति आसन्न हुई है तो उसका अजय से विवाह करना क्या उचित नहीं, जिसके पास सब इच्छाओं की पूर्ति करनेवाली महिमावान अंगूठी है । मेरे इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी तुम नहीं दोगे तो तुम्हारा सिर फट जायेगा ।"

विक्रमार्क ने कहा "साधु ने जब उन तीनों को अंगूठियाँ दीं, तब तीनों ने यही सोचा कि येअंगूठियाँ राजा को समर्पित करें, क्योंकि इसी में राज्य का कल्याण है ।इससे यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि तीनों निस्वार्थी हैं । तीनों में धन की लालच अथवा राज्य की आकांक्षा नहीं है । यह साधारण विषय राजकुमारी की समझ में आसानी से आ गया । जब उसने इन अंगूठियों के बारे में सोचा तो उसे लगा कि हरे पथ्थरवाली अंगूठी अन्यों के मस्तिष्क मेंउत्पन्न विचारों को कान्यान्वित करने का मार्ग सुझाती है । उसी तरह नीले पथ्थर के रंग की अंगूठी उनको साधने की शक्ति प्रदान करती है । परंतु केवल लाल पथ्थरवाली अंगूठी राजा के मस्तिष्क में ऐसे विचारों को उत्पन्न करेगी, जिनसे राज्य का कल्याण होता है । तात्पर्य यह हुआ कि शेष दोनों अंगूठियों का प्रेरणा-स्त्रोत है लाल पथ्थरवाली अंगूठी । वह अंगूठी जय के पास है । इसी कारण अवंती ने उस युवक को पसंद किया ।उससे विवाह रचाया । जय ने भी विजय को अपना मंत्री बनाया, क्योंकि वह उसके विचारों को कार्यान्वित करने की क्षमता रखता है । अजय को सेनाधिपति बनाया, क्योंकि वह कार्य को साध सकने की शक्ति रखता है ।इस कारण राजकुमारी को अविवेकी कहना अविवेक है, असंगत है । कहना तो यही चाहिये कि वह बहुत ही तीक्षण बुद्धि की है । उसका निर्णय ही इसका प्रमाण है ।"

राजा का मौन भंग करने में बेताल सफल हुआ । वह शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा ।

आधार–विशाल की रचना ।

आज्ञाकारी कुत्ता

हेलापुरी की हाट में एक आदमी एक कुत्ते को बेचने ले आया। वहाँ जमी भीड़ को कुत्ते के गुणों के बारे में बताने लगा "यह कुत्ता आप जो भी कहेंगे, सुनता और मानता है। आप जो काम बतायेंगे करता है, चाहे वह मुश्किल काम ही क्यों ना हो।"

उस भीड़ में से एक आदमी ने पूछा "यह कुत्ता तो हर बात सुनता और मानता है। मुश्किल से मुश्किल काम भी कर देता है। सच कहा जाए तो यह कुत्ता बहुत ही वफदार है। फिर भी इसे क्यों बेच रहे हो?"

कुत्ता बेचनेवाले ने कहा "साहब, क्या बताऊँ? कल रात मेरे घर में चोर घुस आये। इस कुत्ते ने उनके कहे मुताबिक किया। मुझे और मेरी पत्नी को जब चोर खंभे से बांध रहे थे तब यह भूँके बिना चुप रहा। उस काम में इसने उनकी मदद की। इतना ही नहीं, लालटेन को अपने मुँह में लटकाये घर की वे सब जगहें दिखायीं, जहाँ तरह–तरह की कीमती चीज़े थीं। उन्होंने जैसा चाहा, वैसा ही इसने किया है। उन चोरों की मदद पहुँचाकर मेरे घर को लूटने में इसने उन्हे पूरा सहयोग दिया; मुझे बरबाद कर दिया।" कहते हुए वह नाराज़ी से अपने दांत पीसे जा रहा था।

यह सुनकर सब लोग ठठाकर हँस पड़े।

—के. आँजनेय.

चन्दामामा परिशिष्ट-६२

हमारे देश के पशु-पक्षी

कलाकार भालू

हमारे देश के भालू का खास निशान है, उसकी छाती पर अंकित 'वी' । भारत में भालू जगह—जगह पर देखे जा सकते हैं । ये पहाड़ों और पथ्थरों से भरे जंगलों में पाये जाते हैं । ये पकड़े जा सकते हैं और आसानी से इन्हें प्रशिक्षण भी दिया जा सकता है । नाचते हुए भालू जो हमारे घरों के सामने लाये जाते हैं, वे इसी प्रकार के हैं । भारत के सर्कसों में भालू के नाच काफी लोकप्रिय भाग हैं । यद्यपि उनके शरीर पर घने बाल होते हैं, फिर भी ये जलते हुए गोलाकार चक्र से कूदते हैं । प्रशिक्षण पाने के कारण इससे इनको कोई नुक़सान नहीं पहुँचता ।

लंबाई में यह भालू क़रीब २५० सें.मी. होता है । मनुष्य की तरह यह खड़ा हो सकता है । जब यह खड़ा होता है तब इसकी ऊँचाई ६५ से ८५ सें मी. तक होती हैं । उसके पाँव के निशान भी बिलकुल आदमी के पैर के जैसे निशान होते हैं । यह भालू भूरे और काले रंग का मिश्रण है ।

दिन के समय ये गोलाश्म के पीछे छिपना पंसद करते हैं । गुफाओं में तो वे सो जाते हैं । शहद उन्हें बहुत पसंद है । वे ताड़ी के मटकों तक पहुँचने के लिए पेड़ों पर भी चढ़ते हैं और उसे पीकर नशे में आ जाते हैं । जंगलों में रहनेवाले नशे में धुत इन भालों की चेष्टाएँ बताते हुए कुछ लोग बहुत मज़ा लेते हैं ।

देखने और सुनने की उनकी शक्ति कमज़ोर होती है, लेकिन उनकी सूँघने की शक्ति बड़ी तीव्र होती है । दूर से ही वे पहचान जाते हैं कि आदमी आ रहा है या वहाँ मौजूद है । हिमालय के भूरे रंग के और इस काले रंग के भालूओं का निकट संबंध है

नंदलाल बोस

आधुनिक भारत की कला के बारे में जब हम सोचते हैं तो प्रथम श्री नंदलाल बोस की ही हमें याद आती है । वे मौलिक कलाकार हैं, और उनकी मौलिकता अद्‌भुत, असमान व अद्वितीय है । यही नहीं अन्य कलाकारों की साधना में भी उन्होने महत्वपूर्ण योगदान दिया । उनके शिष्य बनकर कला के क्षेत्र में उन्होने भी कमाल किया ।

श्री नंदलाल का जन्म १८८० में हुआ । श्री अवनींद्रनाथ टागौर कला के क्षेत्र में अभिरुचि रखनेवाले युवक कलाकारों को शिक्षा देते रहते थे । उनकी यह पाठशाला कलकत्ते में थी । उन्होने देखा कि उनमें से नंदलाल बहुत ही सुयोग्य शिष्य है ।

उन दिनों श्री रवींद्रनाथ टागौर प्रकृति की गोद में विद्‌यापीठ् स्थापित करने के स्वप्न के पूर्ण करने के प्रयत्न में थे । वह स्वप्न 'शांतिनिकेतन' के रूप में साकार हुआ । १९१४ में नंदलाल उसमें शामिल हुए । शीघ्र ही उसके 'कलाभवन' का भार उन्होने अपने कंधों पर लिया । 'कलाभवन' द्वारा कला को प्रोत्साहन दिया जाता था, कला की बारीकियाँ सिखायी जातीं थीं । श्री नंदलाल बोस इस 'कलाभवन' की सेवा

में तन, मन, धन से लग गये । उन्होंने अपने आप को इसकी समृद्धि के लिए समर्पित कर दिया ।

श्री नंदलाल बोस की कलात्मक कृतियों से उनके शिष्य प्रेरित हुए । समीक्षाकार तथा कला-प्रेमियों ने उनकी अभिव्यक्ति की पद्धति में एक नया मोड़ पाया, जिसमें भारतीयता की विलक्षणता विद्यमान थी । श्री नंदलाल ने तीन सिद्धांतों पर ज़ोर दिया, जिनका अनुसरण कलाकार के लिए आवश्यक है । पहला-प्रकृति का ध्यान से अवलोकन; दूसरा-अपनी संस्कृति को संपूर्ण रूप से समझना; तीसरा-परखने की अपनी शैली, जो बिलकुल ही मौलिक हो ।

श्री नंदलाल की कलात्मक कृतियों में इन तीनों सिद्धांतों की परिपूर्णता पायी जा सकती है ।प्रकृति के विभिन्न कोणों को लेकर उन्होने जो रेखा-चित्र खीचे, चाहे वे पेड़ हों, फूल हों, जंतु हों अथवा पक्षी, उन सब में अंतर्निहित तत्वों को उन्होने खोज निकाला, जिन्हें हम स्पष्ट रूप से उनके रेखा-चित्रों में देख सकते हैं ।

अलावा इसके, उन्होने भारतीय संप्रदायों का गहरा अध्ययन किया । उनका यह अध्ययन सृजनात्मक रहा, इसीलिए वे उन्हें बड़े ही अद्‌भुत ढंग से पुनः प्रस्तुत कर पाये ।उदाहरण के लिए अजंता की कला ।

प्रकृति तथा हमारे परंपरागत संप्रदायों को प्रस्तुत करने में उन्होने मौलिकता की पराकाष्ठा दिखायी । यह कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उन्होने उनकी पुनः सृष्टि की । कला उनके लिए जीविका का साधन नहीं था, वृत्ति नहीं थी, बल्कि यौगिक साधना थी । जिस वस्तु का वे चित्रीकरण करते थे अथवा जिस विचार को वे व्यक्त करना चाहते थे, उससे उन्होने परिपूर्ण रूप से तादात्म्य स्थापित कर लिया ।

१९६६ में मृत्यु के पूर्व उन्होने अनगिनत पुरस्कार प्राप्त किये, लेकिन उनके बहाव में वे बह नहीं गये । अंत तक वे साधारण व्यक्ति ही बने रहे और अपनी कला के प्रति ही उनकी निष्ठा स्थिर रही । उन्होने अपने को कला को समर्पित किया । हमारे आधुनिक कलाकारों पर उनकी अमिट छाप है ।

क्या तुम जानते हो?

१. ऊटकमंड, पर्वतीय क्षेत्रों की रानी कही जाती है । उसका वर्तमान नाम क्या है?

२. शिशुओं के लिए अंग्रेज़ी में लिखा गया पहला नाटक कौन-सा था? किसने लिखा?

३. एक विशिष्ट प्रकार की ठोस धातु के लिए कर्नाटक प्रसिद्ध है । उसका नाम क्या है?

४. सर रोजर बानिस्टर सुप्रसिद्ध व्यायामी थे । किस व्यायाम के लिए उन्हें जाना जाता है?

५. 'चारमीनार' को देखने के लिए तुम्हें कहाँ जाना होगा?

६. एक 'क्वैर' में कितने कागज़ होते हैं? एक 'रीम' के कितने 'क्वैर' हैं?

७. स्वतंत्रता के पूर्व लंदन में संपन्न तीनों रौंड टेबल कान्फरेन्सों में दो भारतीयों ने भाग लिया । भाग लेनेवाले वे दोनों सज्जन कौन थे?

८. जीवाणुओं से उत्पन्न होनेवाले रोगों को किसने खोज निकाला?

९. भारत से छोड़ा गया पहला प्रक्षेप्रास्त्र कौन सा है?

१०. भारत का वित्तीय वर्ष अप्रैल से प्रारंभ होता है । ब्रिटेन में यह कब प्रारंभ होता है?

११. प्रचलित टी. वी. सीरियल 'मालगुडी डेस' मशहूर उपन्न्यास पर आधारित है । उपन्यास और उसके रचयिता का नाम क्या हैं?

१२. 'किवि' पक्षी किस देश में पाया जाता है?

१३. किसके लिए मयूर सिंहासन बनाया गया?

१४. चार मौलिक स्वतंत्रताएँ क्या हैं?

१५. १८८५ में बंबई में संपन्न इंडियन नेशनल कांग्रेस के पहले अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे?

उत्तर

१. उदकमंडलम

२. पीटर पान । १९०४ में सर जेम्स ब्यारी ने लिखा ।

३. बिद्रीवेर, क्योंकि यह उत्तर कर्नाटक 'बीदर' से आता है ।

४. १९५४, मई ५ को एक मील की दूरी चार मिनिट से कम समय में दौड़नेवाले पहले व्यक्ति थे वे ।

५. हैदराबाद, आँध्र प्रदेश की राजधानी

६. २४ पन्ने एक 'क्वैर / बीस 'क्वैर' एक 'रीम । आजकल रीम तोला जाता है, जिससे रीम के पन्नों की संख्या में भिन्नता हो सकती है ।

७. तेज बहादुर सप्रू और एम. आर. जयकर

८. फ्रान्स के केमिस्ट, लूइस पास्टर

९. पृथ्वी

१०. अप्रैल, ६

११. 'स्वामी एण्ड हिज़ फ्रेन्ड्स'—लेखक: आर. के नारायण

१२. न्यूज़िलान्ड

१३. मुगल बादशाह शाहजहाँ

१४. बोलने की, पूजा की ज़रूरत व भय से स्वतंत्रता

१५. डब्ल्यू. सी. बनर्जी

चतुर दुश्मन

विशालपुर गाँव में दो प्रमुख हैं । एक है भूषण, दूसरा है रोहित । किसान भूषण के पास शारीरिक बल है तो व्यापारी रोहित के पास धन का बल है । दोनों एक दूसरे से अधिक अक़्लमंद हैं । दोनों में कट्टर दुश्मनी है ।

रमण नाम मात्र के लिए ग्रामाधिकारी है । किसी मुख्य विषय पर निर्णय लेना हो तो भूषण ओर रोहित की सलाह लिये बिना निर्णय लेने का साहस ही नहीं करता । उन दोनों में से किसी एक भी ने विरोध किया तो, वह चुप रह जाता है । किसी कार्य का प्रारंभ भी नहीं करता । भूषण की इच्छा के विरुद्ध कोई काम शुरू करता तो लठैत वह काम रोक देते । रोहित को वह काम अच्छा नही लगा तो उच्च अधिकारी उसमें कोई त्रुटि निकालते और काम रोक देते ।

इस दरम्यान खेती में और अच्छे परिणाम ले आने नयी पद्धतियों का प्रवेश हुआ । खाद का उपयोग करने से फ़सल दुगुनी होगी, इसलिए उस देश के राजा ने चाहा कि समस्त गाँवों को खाद भेजी जाए । लेकिन इस खाद के लिए लोगों को कुछ रक़म भरनी होगी । इस विषय के बारे में चर्चा करने के लिए वह चाहता था कि गाँवों के अधिकारी बुलाये जाएँ और उनकी सलाहें भी ली जाएँ । उनमें से रमण ही एक ऐसा ग्रामाधिकारी था, जिसने राजा से कहा कि इस बारे में अपने गाँववालों से मुझे चर्चा करनी है ।

राजा को इस पर आश्चर्य हुआ और बोला "गाँव की भलाई के लिए मैंने यह काम अपने हाथ में लिया है और तुम एक हो, जो इस संबध में अपने गाँववालों से सलाह–मशविरा करना चाहते हो ।"

रमण ने कहा "प्रभु, हमारे गाँव में रोहित की जानकारी के बिना किसी को व्यापार करने

कुसुम अहूजा

का हक नहीं है । इसलिए आपको खाद रोहित के द्वारा ही बेचनी पड़ेगी । किसान भूषण के आदेश के बिना कोई भी खाद नहीं खरीदेगा । भूषण और रोहित में कट्टर दुश्मनी है । उन दोनों की अनुमति के बिना हमारे गाँव में खाद ले आना असंभव है ।"

रमण की इन बातों पर राजा ने चकित होते हुए पूछा "भूषण और रोहित क्या राजा की आज्ञा का भी विरोध करेंगे?"

"अगर वे ऐसा करते तो क्या मैं चुप बैठता? उन्हें पहले ही जेल में ठूँस देता । प्रभू, वे दोनों के दोनों बहुत चतुर हैं । उनका मतलब केवल अपने स्वार्थ से है । वे भूलकर भी कोई अपराध नहीं करते ।"

रमण की बातों से राजा में कुतूहल जगा । वह उन दोनों के बारे में जानने के लिए और उत्सुक हो गया । उसने बाक़ी सब ग्रामाधिकारियों को भेज दिया और सिर्फ़ रमण को ठहरने के लिए कहा । इस बीच मंत्री वहाँ आया और राजा से बोला "महाराज, दूतों से समाचार मिला है कि हमारे पड़ोसी राजा माधवसेन की बेवक़ूफी और उससे अमल में लायी गयी निरुपयोगी योजनाओं के कारण जनता उससे बहुत ही क्रोधित है । सुनने में आया है कि सेना भी विद्रोह करने को तैयार बैठी है । मैं समझता हूँ कि उस राज्य पर आक्रमण करने का इससे अच्छा मौक़ा हमें नहीं मिलेगा ।"

"माधवसेन की बात छोड़ो । हमारे पूरब की दिशा में जो चंद्रगुप्त है, उसका क्या हाल है? क्या वह कमज़ोर पड़ गया? अगर वह अब भी मज़बूत है तो जैसे ही हम माधवसेन पर आक्रमण करेंगे वैसे ही , हो सकता है, हम पर आक्रमण कर दे । तब हमारी सेना को दोनों सेनाओं से लड़नी होगी । उस हालत में हमारी हार निश्चित है ।" राजा ने गंभीरता से कहा ।

मंत्री ने उत्तर दिया " महाराज, इस समस्या का भी परिष्कार हो जायेगा । हमारे विदूषक ने दो दूतों को प्रशिक्षण दिया है और एक को माधवसेन के पास और दूसरे को चंद्रगुप्त के पास भेजा है । समय-समय पर वे एक दूसरे के ख़िलाफ दोनों के कान भर रहे हैं । दोनों में कट्टर दुश्मनी बढ़ा रहे हैं । आप अगर माधवसेन को लड़ाई में हरायेंगे

तो चंद्रगुप्त को बेहद खुशी होगी ।"

राजा ने मंत्री की बाहवाही की । तब रमण ने दखल देते हुए कहा "प्रभु, लगता है, आपके विदूषक बहुत ही होशियार हैं । मेरी प्रार्थना है कि वे विशालपुर के भूषण और रोहित के बीच में भी मनमुटाव लायें और दोनों को एक दूसरे से लड़ा दें तो मेरी समस्या का भी परिष्कार हो जायेगा । क्या आपके विदूषक मेरा छोटा–सा यह काम कर सकेंगे?"

राजा ने तुरंत विदूषक को ख़बर भेजी । रमण से विदूषक ने पूरा विषय जाना । उसने राजा से पूछा "जब कि भूषण और रोहित जैसे दो प्रमुख व्यक्ति गाँव में मौजूद हैं तो तुम्हारा ग्रामाधिकारी होना कैसे संभव हुआ? जब कि पूरा गाँव उनके अधीन है, उनकी मुट्ठी में है, तो उन्होंने स्वंय ग्रामाधिकारी बनने की कोशिश क्यों नहीं की? उन्होंने यह क्यों नहीं सोचा?"

"दोनों का बल समान है । उनको भली–भाँति मालूम है कि पारस्परिक मुठभेड़ से दोनों को नुक़सान पहुँचेगा । उनमें से कोई ग्रामाधिकारी बनेगा तो दूसरा उसे सह नहीं पायेगा । इससे जो ग्रामाधिकारी होगा उसकी बड़ी बुरी हालत होगी, उसका जीवन ही संकट में फँस जायेगा, हर दिन उसके लिए इम्तहान का दिन होगा । वे दोनों यह जानते हैं , इसलिए उन्होंने तीसरे आदमी को याने मुझे ग्रामाधिकारी बनाकर बिठा रखा है ।" रमण ने विदूषक के संदेह को दूर किया ।

"किसान और व्यापारी जब कि एक ही

गाँव में रहते हैं तो एक दूसरे पर आधारित हुए बिना कैसे रह पा रहे हैं? उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति कैसे हो पाती है?'' विदूषक ने पूछा ।

रमण ने जवाब दिया ''भूषण को जिन वस्तुओं की आवश्यकता है, उन्हें दूसरों से रोहित से खीरदवाता है । रोहित भी यही करता है । किसी भी परिस्थिति में वे एक दूसरे के सम्मुख नहीं आते, नही मिलते, बात नहीं करते ।''

''लगता है दोनों शत्रु होकर भी अच्छी तरह जानते हैं कि कैसे जीना है । ऐसे लोगों को दक्ष और चतुर व्यक्तियों की चालों से ही झुकाया जा सकता है । मैं दो ऐसे चतुर, प्रशिक्षित आदमियों को भेजूँगा, जो उन्हें सबक़ सिखायेंगे ।'' विदूषक ने उपाय बताया ।

राजा को विदूषक के इस उपाय पर आश्चर्य तो हुआ, पर कारण बिना पूछे 'हाँ' कर दिया ।

इसके बाद विदूषक की योजना के अनुसार शंकर भूषण के पास गया तो गोपाल रोहित के पास । दोनों कान भरने में उस्ताद हैं । हर रोज वे भूषण के ख़िलाफ रोहित के और रोहित के ख़िलाफ भूषण के कान भरने लगे । वे तरह-तरह की झूठी शिकायतें एक दूसरे के खिलाफ कहने लगे । धीरे-धीरे दोनों चतुर आदमी अपने-अपने काम में सफल होने लगे । उनकी बातें सुनकर दोनों जोश में अवश्य आ जाते थे परंतु आश्चर्य कि कभी भी दोनो में अब तक कोई झगड़ा नहीं हुआ । वे एक दूसरे के सामने भी नहीं आये ।

यों एक महीना बीत गया । शंकर और गोपाल एक जगह पर गुप्त मिले । वे आपस में कहने लगे '' लगता है, इन दोनों प्रमुखों ने हमारी बातों का विश्वास नहीं किया है । आगे से हम दोनों को सक्षम योजना बनानी पड़ेगी और साथ ही गवाहों की सृष्टि करनी होगी, जिससे वे एक दूसरे से लड़ पड़ें ।''

इस योजना के अनुसार शंकर ने एक दिन भूषण से कहा ''आपकी पशु संपदा को देखकर रोहित जल रहा है । वह उनपर विष का प्रयोग करके उनका नाश करना चाहता है ।''

शंकर ने जिस आदमी को नियुक्त किया, वह विष का प्रयोग करते हुए पकड़ा गया । भूषण ने उसे डाँटा और धमकाया तो उसने स्वीकार कर लिया कि मैं रोहित का आदमी हूँ और उन्होंने ही मुझे इस काम पर भेजा है ।

उसी समय गोपाल से नियुक्त आदमी रोहित के यहाँ चोरी करते पकड़ा गया । उसने भी रोहित को विश्वास दिलाया कि मैं भूषण का आदमी हूँ और उसी के कहे मुताबिक मैंने यह चोरी की है ।

आश्चर्य की बात तो यह कि भूषण और रोहित ने दोनों अपराधियों को ग्रामाधिकारी के सुपुर्द किया, किन्तु ग्रामाधिकारी से एक दूसरे की शिकायत नहीं की ।

एक दिन भूषण ने शंकर को बुलाया और कहा "मुझे संदेह होता है कि रोहित पर तुम जो इलज़ाम लगा रहे हो, वे सब व्यर्थ हैं, बेमतलब के हैं । अब तक रोहित के बारे में जो भी कहा, सब झूठ ही झूठ है । एक सप्ताह के अंदर उसके बारे में अगर कोई सच्चाई बतायी तो ठीक है, नहीं तो मैं ग्रामाधिकारी से शिकायत करूँगा कि तुम्हीं ने मेरे पशुओं पर विष—प्रयोग किया है ।"

रोहित ने भी गोपाल से यही बात बतायी ।

शंकर और गोपाल फिर से छिपे-छिपे मिले और एक दूसरे से कहने लगे "हमने बड़ी चतुरता से जो जाल बिछाया, वह बेकार गया । हम उन्हें उसमें फँसा नहीं सके । हमारे झुठे इलज़ामों का कोई नतीजा नहीं निकला । इस हफ़्ते में अगर हम कोई सच्चाई जान नहीं पाये तो हमारी पोल खुल

जायेगी । राजा की बदनामी होगी । इस बार का प्रयत्न ठोस होना चाहिये ।"

इस बीच खाद का समाचार दोनों को ग्रामाधिकारी से मिला । भूषण ने साफ-साफ कह दिया कि खाद सीधे किसानों को पहुँचाया जाना चाहिये। मैं उन्हें किसी भी व्यापारी से लेने को तैयार नहीं हूँ । रोहित ने कहा कि जो भी खाद चाहता है, उसे मुझी से खरीदना होगा ।

ग्रामाधिकारी मेरे और भूषण की बात राजा से कहे, इसके पहले ही रोहित ने राजा के पास एक आदमी को भेजने का निर्णय किया । उस आदमी ने भूषण का प्रतिनिधित्व करते हुए कहा "किसानों को खाद की नितांत आवश्यकता है । उन्हें राजा सीधे किसानों को पहुँचाएँ तो अच्छा होगा । दोनों के बीच में व्यापारी का क्या काम?"

रोहित ने सोचा कि व्यापारी होकर भी जब मैं राजा से यह निवेदन करूँगा तो मेरे प्रति उनकी सद्भावना होगी ।

शंकर ने यह समाचार भूषण को बताया । उसकी तारीफ़ करते हुए उसने कहा "मेरे लिए बहुत ही उपयोगी खबर ले आये हो । एक व्यापारी ही ऐसा प्रस्ताव रखे तो, राजा अवश्य ही मान जायेंगे । चुँकि गाँव का कोई भी आदमी मेरे खिलाफ़ कुछ नहीं कहेगा, इसलिये सारी खाद मेरे ही पास पहुँचायी जायेगी । वह खाद मैं किसानों को बेचूँगा, जिससे व्यापार की कला भी जान जाऊँगा ।"

ग्रामाधिकारी, शंकर और गोपाल, राजा, मंत्री और विदूषक से मिलने राजधानी पहुँचे । उन्होंने उन्हें सब कुछ बताया ।

राजा ने पूछा "बोलो, अब मुझे क्या करना चाहिये?"

ग्रामाधिकारी रमण ने राजा से कहा "रोहित को ख़बर भेजिये कि राजा की आज्ञा के अनुसार खाद बेची जाए । भूषण किसी दूसरे से यह खाद खरीदवायेगा । हाँ, वे स्वंय अपना अपराध स्वीकार नहीं करेंगे, परंतु मुझे मालूम है कि वे राजा की आज्ञा का तिरस्कार करने का साहस नहीं रखते ।"

राजा ने लंबी साँस खींचते हुए कहा "ऐसे लोग मिल—जुलकर रहें तो कितना अच्छा होगा ।"

शंकर और गोपाल ने विदूषक से कहा

"हमें बहुत ही अचंभा हो रहा है । हमारी योजनाओं का पता उनको पहले ही लग जाता था । एक ही बार हमने सच कहा तो वे दोनों समझ गये कि हाँ यह सच है । अवश्य ही उनके पास कोई ऐसा जादू है, जिससे वे सच का पता लगा लेते हैं ।"

इसपर विदूषक हँस पड़ा "अब सब कुछ मेरी समझ में आ गया है । इसमें किसी तरह का जादू नहीं । भूषण और रोहित को एक दूसरे की अक़्लमंदी पर पूरा भरोसा है । उन्हें मालूम है कि शत्रुओं की अक़्लमंदी को भाँपना कठिनतम काम है । साधारण विषयों को , जिनकी कल्पना आसानी से की जा सकती है, शिकायत के रूप में बताया गया तो उन्होंने उनका विश्वास नहीं किया । अपनी कल्पना से भी परे विशिष्ट समाचारों का ही उन्होंने विश्वास किया । वे सचमुच जीने की कला जाननेवाले शत्रु हैं । ऐसे लोगों की शत्रुता से उन्हें और आसपास के लोगों को भी लाभ ही पहुँचता है ।"

यह सुनते ही राजा चौंक पड़ा"इसका मतलब यह हुआ कि अपनी कल्पना के अनुरूप जो दूत समाचार ले आया है, उसकी बातों का हमने विश्वास किया है । हम माधवसेन पर आक्रमण करना चाह रहे थे । इससे बढ़कर मूर्खता और क्या हो सकती है । रमण का शायद अभिप्राय है कि हम भी अपने पड़ोसी राज्यों से, शत्रु होते हुए भी, जीना सीखें । इसलिए उसने मेरी लड़ाई को स्थगित करने की सलाह दी है । है ना?" राजा ने ग्रामाधिकारी रमण से पूछा ।

रमण ने विनय से राजा से कहा "प्रभू, जो शत्रु, शत्रु होकर भी जीना जानते हैं, जीने की कला जानते हैं, उनके बीच अधिकारी बनकर मैं रह रहा हूँ । मेरी बुद्धि मंद है, फिर भी मैं जीवन के इस सत्य को समझ पाया हूँ कि ऐसे दो चतुर शत्रुओं के बीच किस प्रकार जीवन बिताना चाहिये । सूक्ष्मग्राही प्रभू की बातों को भला मैं कैसे इनकार कर सकता हूँ ।"

भूषण और रोहित की शत्रुता की कृपा से उस देश का राजा अपने शत्रुवों के बीच सुख–शांति से बहुत समय तक शासन करता रहा ।

मेंढ़क, जो तैरना नहीं जानते

राघवपुर के एक किसान ने खेती के खर्चों के लिए एक सूदखोर से थोड़ी-सी रकम ली । कुछ सालों तक वह कर्ज़ चुका नहीं पाया । बीच-बीच में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह और भी रक़म उससे लेता रहा । इससे मूल धन और ब्याज बहुत ही बढ़ गया ।वह कर्ज़ चुका नहीं सका । सूदखोर ने उसका खेत अपने अधीन कर लिया । गाँव के मुखिया ने किसान की कोई मदद नहीं की, तो राजा से जाकर उसने शिकायत की । राजा ने सूदखोर को बुलाया और सुनवाई शुरू की ।

राजा ने किसान से पूछा "क्या तुम्हें मालूम नहीं कि तुमने जो कर्ज़ लिया है, उसे चुकाना तुम्हारा फर्ज़ है?

"जानने मात्र से क्या लाभ महाराज । क्या मेंढ़कों को तैरना नहीं आता? आता है, लेकिन हमारे गाँव के मेंढ़क पाँच साल के हो गये । परंतु अब भी उन्हें तैरना नहीं आता ।" किसान ने कहा ।

"ऐसी असंगत बातें क्यों कर रहा है यह किसान" राजा ने मंत्री से हँसते हुए पूछा । आखिर सूदखोर को जो रक़म चुकानी थी, चुका दी गयी ।

फिर राजा ने किसान से कहा "जब तुम्हारे गाँव के मेंढ़क तैरना सीख जाएँगे, तब रक़म सरकारी ख़ज़ाने में भर देना ।" यह कहकर राजा ने किसान को भेज दिया ।

राजा की ये बातें सुनकर मंत्री हक्का-बक्का रह गया । मंत्री की समझ में नहीं आया कि राजा का ऐसा कहने का क्या मतलब है? तब राजा ने मंत्री को समझाते हुए कहा "किसान बताना चाहता है कि पाँच सालों से उसके यहाँ बारिश नहीं हुई, जिसकी वजह से फ़सल नहीं हुई । ऐसा कहने के बजाय किसान बता रहा है कि उसके गाँव में मेंढ़क तैरना नहीं जानते हैं ।"

—एस. भास्कर

हनुमान अयोध्या निकल पड़ा ।रास्ते में वह वाल्मीकि के आश्रम में उतरा । मुनिवर वाल्मीकि को नमस्कार किया और पूछा "महामुनि, राम के साथ ऐसा क्यों हुआ?"

वाल्मीकि मंद मुस्कान भरते हुए बोले "हनुमान, राज्य का पालन करना सुलभ कार्य नहीं है । शंबुक परम साधु था, निरपराधी था, तपस्वी था, ज्ञानी था, किन्तु उच्च वर्ग के मिथ्याभिमान ने उसकी बलि ली । उनका अहंकार, दर्प तथा मिथ्याभिमान उसका प्राण लेकर ही शांत हुआ । राम जानता था कि शंबुक के वध का कार्य अनुचित है, परंतु उच्च वर्ग की तृप्ति तथा सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए उसे यह घोर कार्य करना ही पड़ा । अशिक्षित तथा संस्कारहीन लोगों के मुँहों से जो कड़वी बातें निकलती हैं, जो विषबीज बोये जाते हैं, अपने को भी त्यागकर उनके बुरे परिणामों को रोकना राजा का कर्तव्य होता है । धोबी की बात पर राम ने सीता को वन भेज दिया, यह तुम तो जानते ही हो ।राम आदर्श राजा है । उसके कुछ विशिष्ट सिद्धांत व आदर्श हैं ।इनकी स्थापना के लिए राम ने अपना सुख-चैन खोया । परंतु याद रखो, राम के आदर्श चिरस्थायी हैं । वे मानव-जीवन के पथ-प्रदर्शक हैं ।"

हनुमान ने सीता का निवास-स्थल तथा कुश लव ने वृक्षों पर अपने बाणों से जो चिन्ह अंकित किये, उन्हें भली-भांति

कि अपने भाग्य पर हँसूँ अथवा रोऊँ । अपने उद्विग्न मन को उसने संभाला और उड़ता हुआ अयोध्या पहुँचा । राजभवन के सम्मुख जो उद्यानवन था, उसमें उतरा ।

वहाँ कुश लव विविध प्रकार की विद्याओं से अपना मनोरंजन कर रहे थे । उन्होंने अपने बाणों से एक सुंदर महल ही खड़ा कर दिया । कुश लव ने हनुमान को देखा और दोनों ने परस्पर मूक संकेत किया । फिर दोनों ने हनुमान के चारों ओर बाणों से एक घेरा बना दिया ।

लव ने गरजते हुए पूछा "ऐ मायावी, तुम कौन हो?" लव में सीता के लक्षण अधिक हैं । कुश राम के आकार का है ।सीता और राम की तरह दिखाई पड़नेवाले लव व कुश को देखते ही रह गया हनुमान । उसने उन से कहा "मैं हनुमान, हूँ, राम का दर्शन करना चाहता हूँ ।"

"हम तुम्हारा कैसे विश्वास करें? गदा पकड़ने मात्र से क्या कोई हनुमान बन जाता है? तुम तो हमें मायावी लगते हो ।" कहते हुए लव ने हनुमान को अपने बाण का निशाना बनाया ।

राम की तरह कुश शांत स्वभाव का था । उसने शांति से कहा" जब तक तुम अपने को हनुमान प्रमाणित नहीं करते, तब तक हम तुम्हें नहीं छोड़ेंगे ।"

लव ने कहा "अपना प्रताप दिखाओ । अपना विस्तृत रूप दर्शाओ ।"

हनुमान ने विस्तृत रूप धारण किया और

देखा ।सीता पृथ्वी के जिस भाग पर चलीं, उसे छूआ और भक्ति तथा श्रद्धा से अपना माथा टेका । फिर वह अयोध्या चल पड़ा ।

वह सोच भी नहीं सकता था कि सीता मैया को इस प्रकार पृथ्वी में समा जाना होगा । दया, कृपा, मातृवात्सल्य तथा दीन जनों के प्रति करुणा जैसे उदात्त गुणों की प्रतिमूर्ति हैं देवी सीता । उनका स्मरण करते ही उसकी आँखों से आँसू बहने लगे । किन्तु श्रीराम को वह कैसे उत्तरदायी ठहराये? जैसे वाल्मीकि ने बताया, श्रीराम ने लोक–कल्याण के लिए ही यह कार्य किया होगा । श्रीराम और सीता की सेवा करने का उसे अवसर मिला, यही उसका भाग्य है । वह स्वयं निर्णय नहीं कर पा रहा था

उन दोनों को अपने आलिंगन में लिया। उनको अपने कंधों पर बिठाया और आकाश में उड़ा। सरयू नदी से होते हुए उसने पूरे अयोध्यानगर का भ्रमण किया। उसका वेग वर्णनातीत था। वह आकाश को छू रहा था। अपनी पूँछ तेज़ी से घुमायी और एक दुर्ग बना दिया। कुश लव को अपनी भुजाओं पर बिठाकर बोला "मैरावण के संहार के समय राम लक्ष्मण को मैंने इसी प्रकार कंधों पर चढ़ाया है।" वह दुर्ग प्राकारों पर से उड़ता हुआ नीचे उतरा।

कुश लव ने हनुमान को प्रणाम किया "हनुमान, आपके प्रताप को आँखों देखने की हमारी बड़ी लालसा थी, इसीलिए हमने ऐसा नाटक किया। हमें क्षमा कर दो।"

हनुमान भी हँसता हुआ बोला "तुम दोनों की इच्छाओं की पूर्ति के लिए मैंने भी तो बहुत नाटक किया है।"

कुश लव हनुमान को लेकर राम के पास गये। हनुमान को देखते ही दुख के कारण राम की आँखों से आँसू बहने लगे। राम के सामने घुटने टेक कर हनुमान ने कहा "स्वामी, आप भी एक सामान्य मानव की तरह आँसू बहाएँ, यह अच्छा नहीं लगता। राज्य-पालन सुख-भोग की शैय्या नहीं है। कठिनतम कार्य भी करने पड़ते हैं, कठोर से कठोर त्याग भी करने पड़ते हैं। लोग भविष्य में राम-राज्य का उदाहरण देंगे और कहते जायेंगे कि राजा हो तो ऐसा हो, राज्य–पालन हो तो ऐसा हो। इसीलिए यह सब कुछ हुआ है। आपके आदर्श चिर स्मरणीय हैं। आप उदाहरण स्वरूप हैं। आप जो भी करते हैं, उसमें परमार्थ होता है। जो इसे समझ सकते हैं, समझ जायेंगे और अपने जीवन में भी आचरण करेंगे "हनुमान ने यों राम को सांत्वना दी।

दीर्घ श्वास लेते हुए राम ने कहा "हनुमान, तुम्हें देखकर और तुम्हारी बातें सुनकर मेरा मन थोड़ा-सा शांत हुआ है। सीता के बिछड़ जाने से मैं कितना दुखी हूँ, यह तुम तो जानते ही हो,। अगर इस दुख के साथ अश्वमेध याग भी विफल हुआ तो तुम्हारा राम जीवित नहीं रह सकेगा,

नहीं रहेगा । ज्ञात हुआ है कि अश्व अब मणिपुर की दिशा में अग्रसर हो रहा है । अश्व की रक्षा का भार तुम्हारे सुपुर्द कर रहा हूँ । इसीलिए मैंने तुम्हें यहाँ बुलाया है । अश्व के साथ मेरे तीनों भाई भी जा रहे हैं । तुम भी उनके साथ जाओ ।"

राम की आज्ञा का पालन करने के लिए हनुमान ने अपनी गदा अपनी भुजाओं पर ड़ाल ली और आकाश में उड़ गया ।

हनुमान जब आकाशमार्ग से जा रहा था तो उसने देखा कि एक घने जंगल में एक राक्षस और एक राक्षस-स्त्री विजय नाद करते हुए नाच रहे हैं । उन दोनों राक्षसों ने खूब पी रखा है । हनुमान को संदेह हुआ तो सूक्ष्म रूप में एक पेड़ पर जा बैठा और उनके कार्यकलापों को तीक्षण दृष्टि से देखने लगा । उन्होने नाचना बंद कर दिया और उसी पेड़ के नीचे आकर वार्तालाप करने लगे । हनुमान ने उनकी बातें ध्यान से सुनीं ।

राक्षस स्त्री ने कहा "सही बताया गया है कि शत्रु-शेष नहीं होना चाहिये । हम भी शत्रु-शेष बनकर रह गये हैं । अच्छा हुआ, हमने जीवित रहकर अपने भाइयों का ऋण चुकाया है ।करालकंठ, उस रात को धोबी बनकर तुमने कितना अच्छा नाटक खेला? तुम्हारी चिल्लाहट से उस रात को पूरी की पूरी बस्ती निस्तब्ध रह गयी ।"

राक्षस ने उसके जवाब में कहा "शूर्पणखा, तुम्हारे आभूषण कितने मनोहर लग रहे थे । अपना रूप बदलकर तुमने भी तो बहुत अच्छा नाटक खेला ।"

करालकंठ शतकंठ रावण का भाई है ।राम-रावण के युद्ध में अपने को बचाकर भाग गया ।अपने अग्रज शतकंठ रावण का वध करनेवाले राम-सीता से प्रतिशोध लेने के लिए धोबी के रूप में अयोध्या पहुँचा । रावणासुर की बहन शूर्पणखा भी जीवित है । संयोगवश वह भी राम और सीता से प्रतीकार लेने के लिए धोबिन के रूप में अयोध्या आयी । अनजाने वे दोनों एक स्थल पर मिले ।

दोनों भूखे थे । मानव दिखायी पड़े तो निगल जाने के लिए नगर की सड़कों पर मानव के रूप में विचर रहे थे । अकस्मात वे दोनों एक दूसरे से मिले । शूर्पणखा ने तिरछी नज़र

से करालकंठ को देखा और उसपर अपना मोह-जाल फैलाया। उसे अपने साथ ले गयी। कराल भी इस आशा में उसके साथ गया कि अवसर मिलने पर, स्त्री ही सही, निगल जाऊँ और अपनी भूख मिटाऊँ।

थोड़ी दूर ले जाने के बाद शूर्पणखा ने राक्षस का रूप धारण किया और उसे खाने ही वाली थी कि कराल ने चिल्लाया "तुम भी राक्षस हो?" कराल भी अब राक्षस बन गया। दोनों ने योजना बनायी और उस योजना के अनुसार धोबी और धोबिन का रूप धारण करके राम की निंदा की, उसके चरित्र को कलंकित किया। अपना काम सफलता से समाप्त करके वे अयोध्या से भागकर जंगल में आकर बसने लगे।

पेड़ पर बैठा हनुमान उनकी बातें ध्यान से सुन रहा था। "अच्छा हुआ कि उस समय हनुमान नहीं था। अगर वह होता तो हमारा पता लगाता और हमें मौत के घाट उतारता, हमारे भाइयों के पास हमें भी भेज देता। हम भाग्यशाली हैं, इसीलिए वह वानर उस समय किसी पर्वत पर तपस्या कर रहा था।" खुशी–खुशी कराल बोलता जा रहा था।

शूर्पणखा ने कहा "उस हनुमान की बात मत करो। उसका नाम लेते ही मेरा बदन क्रोध से जल उठता है।"

कराल ने दांत दिखाकर ठठाकर हँसते हुए कहा "कहो, क्रोध से नहीं, भय से काँप उठती हो तुम।"

"उस पूँछवाले ने भाई का दिया हुआ मेरे सोने का महल जला दिया। मैं थोड़े ही उससे ड़रती हूँ। मैं जलती हूँ उससे। हाँ, जलती हूँ।" कहती हुई शूर्पणखा अपनी पीठ पर हाथ रखकर कुछ ढूँढ़ने लगी।

उसकी पीठ पर जलने की वजह से छाला पड़ गया था। जब लंका-दहन हो रहा था, तब एक जलता हुआ खंभा उसकी पीठ पर गिरा। फलस्वरूप यह छाला पड़ गया। कराल ने उसे देखते हुए व्यंग्य से कहा "अच्छा, इसीलिए तुम जलन की बात कर रही थी? शायद अब भी दर्द करता होगा। महल जल गया तो क्या हुआ, छाला तो बच गया।"

उसकी हँसी-मज़ाक पर शूर्पणखा नाराज़ होती हुई बोली "चुप करो। आगे कुछ और कहा तो अच्छा नहीं होगा।"

"शूर्पणखा, तुम नहीं जानती, मैं उससे कितना चिढ़ता हूँ । वह तो एकदम शैतान है, शैतान ।" उसने कहा ।

"अब तुमने ठीक कहा । बड़े शूर की तरह डींग मत हाँको । क्या मैं जानती नहीं, उससे जान बचाकर तुम कैसे भाग गये थे ।कायर कहीं के । युद्ध में वीर की तरह मरना था, पर पीठ दिखाकर भाग आये हो" शूर्पणखा ने बड़ी नाराज़ी से कहा ।

'भाग आया, इसीलिए तो प्रतीकार ले पाया । तुम्हारी जैसी सुँदरी मेरे पल्ले भी तो पड़ी है ।" कराल ने कहा ।

शूर्पणखा ने "यहाँ से चलते हैं । किन्ही दूर प्रांतों में जाकर अपना जीवन सार्थक बनायेंगे" कहा ।

'अवश्य जाएँगे । लेकिन एक और काम करके जाएँगे । राम के याग के अश्व को हमें पकड़ना होगा ।" राक्षस ने कहा ।

"खूब सोचा है, तुमने । घोड़े पर सवार होकर जाएँगे" शूर्पणखा ने कहा ।

"बुद्धू और बदसूरत कहीं की । घोड़े पर सवार होने के लिए नहीं ।" कराल ने गंभीरता से कहा ।

"क्या बक दिया? फिर ऐसा कहोगे तो मैं चुप नहीं रहूँगी । सावधान । अपने नाखूनों का पैनापन दिखाऊँगी । नाक और कान थोड़े मोटे हो गये, तो क्या हुआ? मेरी सूरत तो अब भी सुँदर है । लक्ष्मण के काटने के पहले लंबी नाक और चौड़े कान थे । परंतु हाँ, अब भी मैं चंद्रमुखी हूँ । यह बात छोड़ो और यह तो बताओ कि हम जहाँ चाहें वहाँ आ जा सकते है तो फिर इस घोड़े की क्या ज़रूरत?" शूर्पणखा ने पूछा ।

कराल ने कहा "उसे हमें मार डालना चाहिये ।"

"घोड़े से हमारा क्या झगड़ा?" शूर्पणखा ने पूछा ।

"झगड़ा घोड़े से नहीं, राम से है । घोड़ा दिखायी ना पड़े तो राम का याग विफल हो जायेगा । सीता के ना होने की वजह से वह अधमरा है । तिसपर यह याग भी विफल हुआ तो पूरा मर जायेगा ।" स्पष्ट करते हुए कराल ने शूर्पणखा को समझाया ।

"तो चलो, उसे शीघ्र ही मार डालें । घोड़े के सिर का मांस बहुत रुचिकर भी
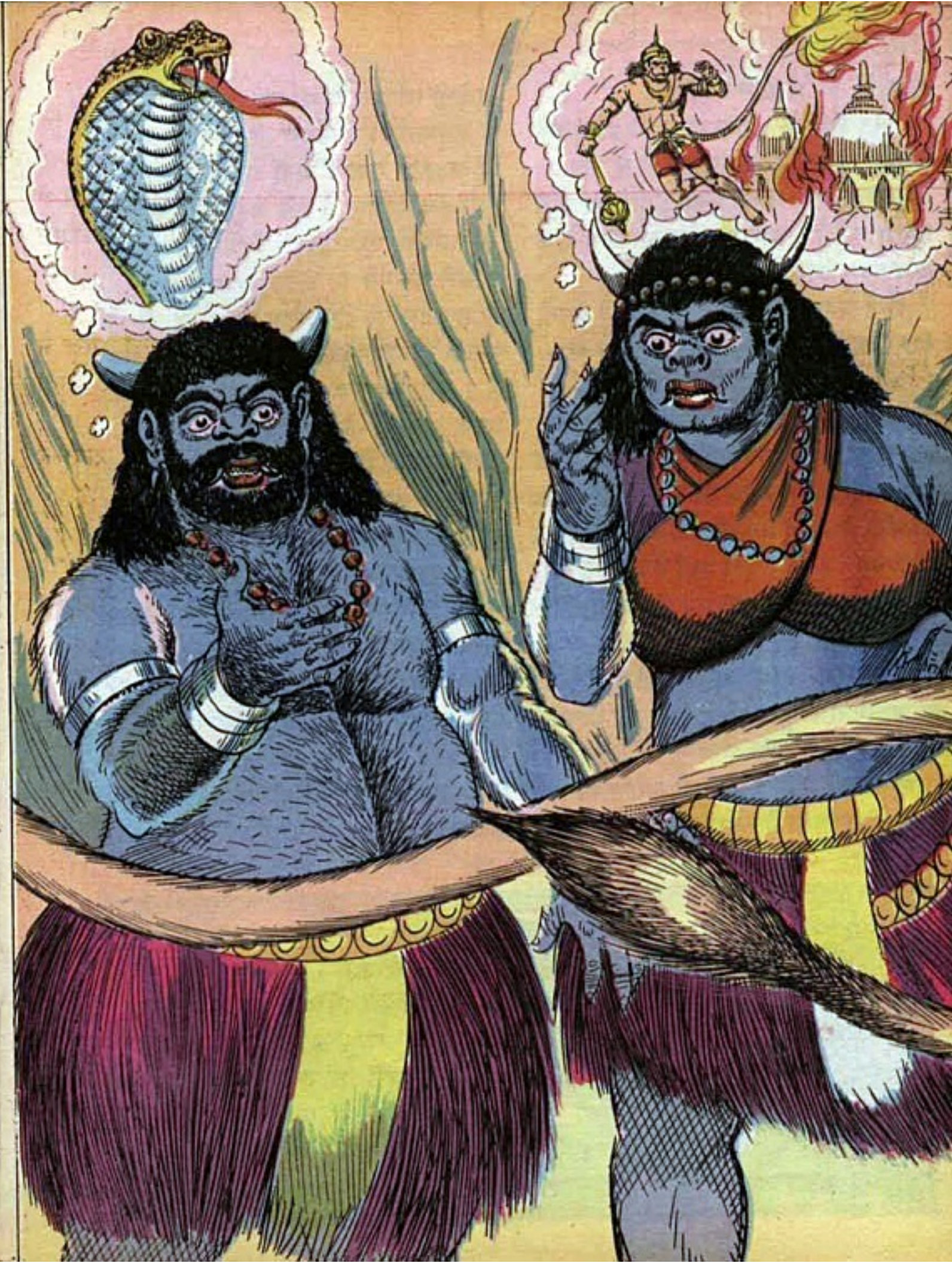
होता है" शूर्पणखा ने कहा ।

"पेटू कहीं के । सदा खाने की ही सूझती है तुझे" कहता हुआ कराल वहाँ से उठा ।

'जो भी हो । जल्दी चलो । घोड़े का काम तमाम करें ।" कहती हुई उसने कराल के हाथ पकड़ लिये ।

दोनों जब जाने लगे तब हनुमान ने अपनी पूँछ फैलायी और उनके रास्ते में डाल दी ।

कराल चिल्ला पड़ा "साँप, बड़ा साँप ।" शूर्पणखा ने उसे ग़ौर से देखा और चिल्लाती हुइ बोली "यह साँप नहीं । बंदर की पूँछ है । यह हमपर यमराज का फेंका गया फाँसी का फंदा है । हनुमान की पूँछ ।"

"चुप रह । हनुमान यहाँ कहाँ से आ गया?जो भी देखती हो, तुम्हें हनुमान ही लगता है" कराल ने कहा ।

"मैं अच्छी तरह पहचान सकती हूँ । लंका को जलानेवाली पूँछ यही है" थर थर कांपती हुई शूर्पणखा ने कहा ।

शूर्पणखा की बातें सुनते ही कराल भागने लगा तो शूर्पणखा चिल्लाती हुई बोली "मुझे अकेली छोड़कर कहाँ भाग रहे हो?"

हनुमान पेड़ से उतरा और भयंकर आकार में खड़ा हो गया । दोनों राक्षस जब भागने लगे तब हनुमान ने एक बड़ा पर्वत उखाड़ा और उनपर फेंक दिया । वे दोनों उस पहाड़ के तले मर गये ।

हनुमान को इस बात की तृप्ति थी कि उसके हाथों शत्रुशेष का विनाश हो गया है । वह सिंहनाद करता हुआ मणिपुर की तरफ आकाश–मार्ग में बढ़ा ।

सुँदर वनों से उछल-कूद करती प्रवाहित होती हुई गंगा को पार करता हुआ मणिपुर राज्य के आसपास पहुँचा ।

दूर ब्रह्मपुत्र नदी चमक रही थी । लगता था चाँदी पिघल रही है । इतने में हनुमान ने देखा कि मणिपुर की राजधानी की सीमाओं पर एक बिजली कड़की और कोई बहुत बड़ी ध्वनि करता हुआ अति वेग के साथ चला जा रहा है ।दूसरे ही क्षण हनुमान भी उस बिजली के वेग से भी अधिक वेग से उधर उड़ता हुआ गया ।

दुराशा

कश्यप के पिता के मरे एक भी साल नहीं हुआ। लेकिन इस एक ही साल के अंदर अनुभव ना होने की वजह से व्यापार में उसको बहुत ही नुक़सान हुआ। फलस्वरूप कर्ज़दार बन गया। इन कर्ज़ों को चुकाने के लिए बाप-दादाओं का दिया हुआ मकान भी उसे बेचना पड़ा। अपनी पत्नी और दो बच्चों को लेकर वह अपना स्वग्राम धर्मपुरी पहुँचा। उस गाँव में खपरैलों से ढ़का एक छोटा-सा मकान है, जिसे दादी पोते के लिए छोड़ गयी थी।

उजड़े हुए उस घर को पति-पत्नी ने चार दिन तक कष्ट उठाकर ठीक-ठाक किया। अब कश्यप के सामने गंभीर समस्या तो यह है कि परिवार चलाने के लिए क्या किया जाए? कश्यप की पत्नी कौसल्या अक़्लमंद औरत है। अक़्लमंद से दुगुना वह झगड़ालू और तेज़ ज़बान की है। चिंता में खोये हुए अपने पति को देखकर उसने कहा "क्यों इतने चिंतित हो रहे हो? जहाँ हम सुख-चैन से रहे, वहाँ रहना हमें अच्छा नहीं लगा, इसीलिए इतनी दूर आ गये हैं। अब यहाँ लकड़ियाँ बेचेंगे। गाँव के चारों ओर घना जंगल है। पैनी धारवाली कुल्हाड़ी भी है। अब और ज़्यादा क्या कहना है? जाओ।"

कश्यप ने चुपचाप कुल्हाड़ी अपने कंधे पर ड़ाल ली और जंगल की ओर निकल पड़ा।

जंगल में हरे-भरे पेड़ थे। जहाँ देखो, वहाँ हरियाली ही हरियाली थी। दुपहर तक वह घूमता रहा, लेकिन कहीं भी उसे सूखा पेड़ नहीं मिला।

"मेरा भी कैसा दुर्भाग्य। अब करूँ भी क्या? कोई ना कोई पेड़ काट डालूँगा तो हफ़्ते भर में सूख तो जायेगा। तब उसकी

राम नारायण चौबे

लकड़ियाँ काटकर शहर में बेच आऊँगा ।" यह सोच कर कश्यप ने कुल्हाड़ी उठायी और पेड़ को काटने चला ।

दूसरे ही क्षण उसे आवाज़ सुनायी पड़ी "कश्यप, रुक जाओ ।" फिर उसने देखा कि हरी साड़ी में चमकती हुई एक स्त्री उसके सामने खड़ी है ।

कश्यप क्षण भर के लिए स्तब्ध रह गया । स्त्री को प्रणाम करके वह कुछ कहने ही वाला था कि वह स्त्री बोली "कश्यप, यह कैसा अत्याचार है? हरे-भरे पेड़ को काटने के लिए तुम कैसे सन्नद्ध हो गये?"

"माँ, तुम तो मेरा नाम जानती ही तो मेरे दारिद्रय का भी तुम्हें पता होगा । मेरे, मेरी पत्नी तथा बच्चों के जीवित रहने के लिए थोड़ा ही सही, अन्न तो चाहिये ना? इसलिए लकड़ियाँ काटकर उन्हें बेचना अपने जीवन का धंधा बनानेवाला हूँ ।" कश्यप ने कहा ।

वह स्त्री कश्यप को सहानुभूति भरी नज़र से देखती हुई बोली "मैं वनदेवी हूँ । तुम्हारी भलाई करना चाहती हूँ ।" कहती हुई उसने ताली बजायी ।एक बहुत दी सुँदर और स्वस्थ गाय सामने आ खड़ी हुई ।

"इस गाय को अपने घर ले चलो, तुम या तुम्हारी पत्नी ही इस दुह सकते हैं ।जब तक तुम दोनों दुहते रहोगे, तब तक यह दूध देती रहेगी । आगे से कभी भी हरे पेड़ों को मत काटना" कहकर वनदेवी अदृश्य हो गयी ।

कश्यप फूले ना समाया ।उसने कुल्हाड़ी कंधे पर ड़ाल ली और गाय को हाँकता हुआ घर की ओर चल पड़ा ।

कौसल्या अपने पति का इंतज़ार कर रही थी । जब पति को खाली हाथ देखा तो नाराज़ होती हुई बोली "खाली-खाली खुशी-खुशी लौट रहे हो । लकड़ियाँ कहाँ हैं?"

"लकड़ियाँ क्यों? कामधेनु जैसी गाय को अपने साथ जो लाया हूँ ।" उसने पत्नी को जो हुआ, सब कुछ सुनाया ।

कौसल्या ने अपने पति की बातों का विश्वास नहीं किया ।उसने हाँड़ी में से पानी फेंक ड़ाला और दूध दुहकर हाँड़ी भरती रही । हाँड़ी भर गयी, लेकिन गाय तो दूध देती ही रही । कश्यप वह दूध शहर ले

गया । उसे बेचा और घर के लिए आवश्यक वस्तुओं को खरीदकर ले आया ।

एक हफ़्ते में कौसल्या दूध दुहती-दुहती तंग आ गयी ।एक दिन सबेरे उसने अपने पति से कहा "दूध दुहते-दुहते हाथों में छाले पड़ गये हैं, तंग आ गयी हूँ । इस अनाथ गाय को देवी को लौटा देना और उसे धमकाना कि पेड़ काटूँगा । फिर उससे कोई अच्छा वर माँगना ।"

कश्यप चुपचाप गाय के साथ जंगल में पहुँचा । पेड़ को काटने ही वाला था कि देवी प्रत्यक्ष हुई और बोली "कश्यप, फिर यह कैसी बेवकूफ़ी?"

"क्या करूँ देवी? मेरी पत्नी दूध दुहने से तंग आ गयी है ।वह यह काम करने से इनकार कर रही है ।" कश्यप ने बताया ।

वनदेवी एक क्षण के लिए रुक गयी और फिर ताली बजायी ।तक्षण वह सफ़ेद गाय अदृश्य हो गयी और उसकी जगह एक काली बतख दिखायी पड़ी ।

"कश्यप, इस बतख को ले जाओ । जब तुम और तुम्हारी पत्नी अंड़े देने के लिए कहोगे, तब-तब यह बतख अंड़े देगी ।" कहकर वनदेवी अदृश्य हो गयी ।

कश्यप उस बतख को लेकर घर आया । विवरण जान कर कौसल्या की खुशी का ठिकाना ना रहा ।उसने कहा "ओ मेरी सुँदर बतख, अंड़े, अंड़े ।"

बतख ने तुरंत एक के बाद एक अंड़े दिये । हर रोज़ कश्यप उन्हें शहर में बेचकर आता था ।

दस दिनों में कौसल्या का मन उस बतख
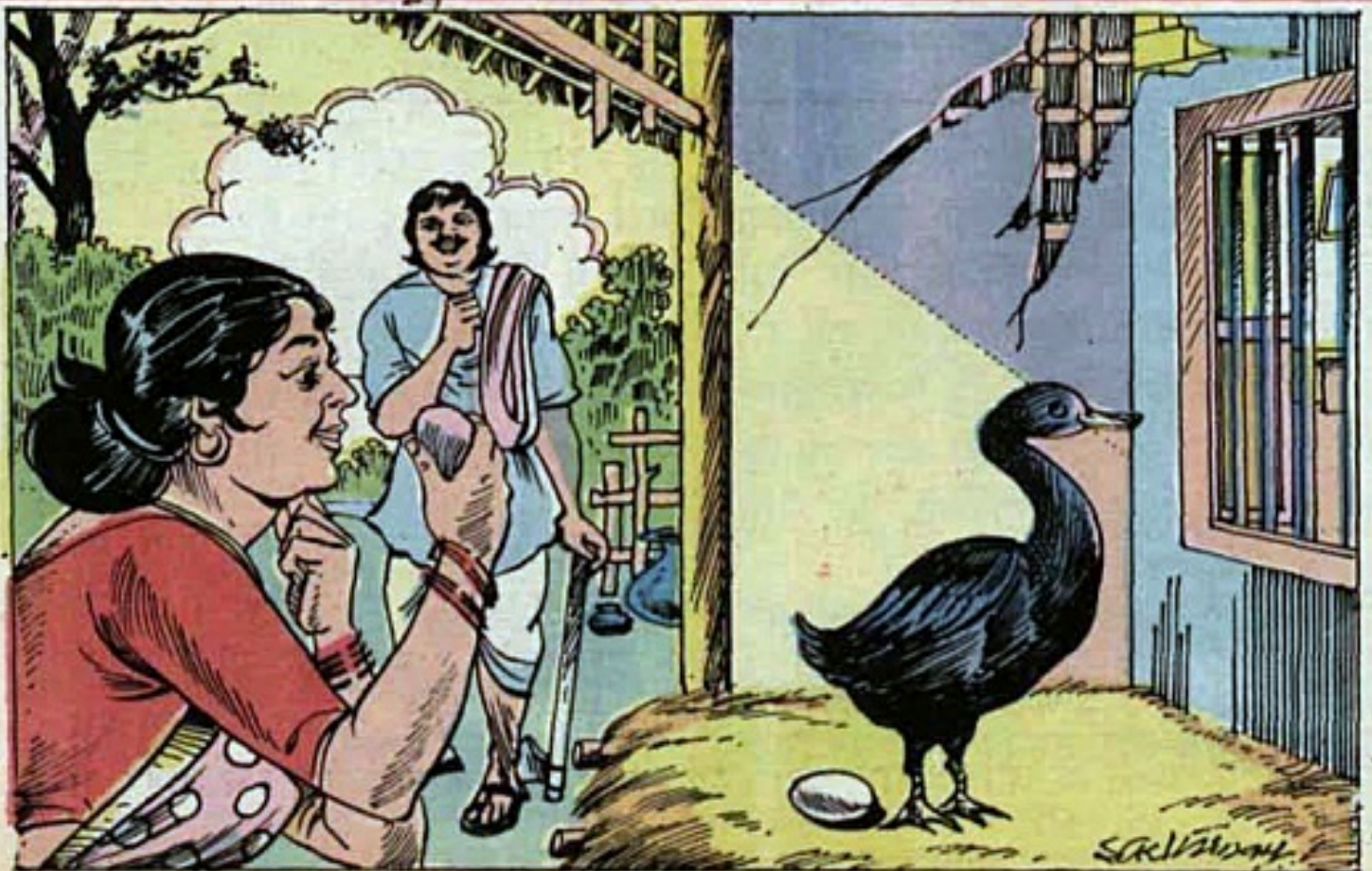
से भी उचट गया । उसने कहा "अंड़े, अंडे कहकर चिल्लाती–चिल्लाती मेरे गले में भी दर्द होने लगा है । अड़ोस-पड़ोस की औरतें भी बार-बार कह रही हैं कि कोयल जैसे तुम्हारे गले से यह कर्कश स्वर क्यों और कैसे? इस मायावी बतख को उस वनदेवी को लौटा दो और काम की कोई और चीज़ ले आओ । कुल्हाड़ी ले जाना भूलना नहीं ।"

दूसरे दिन वह बतख को लेकर जंगल चल पड़ा और पेड़ काटने ही वाला था कि देवी पुनः प्रत्यक्ष हुई और बोली "यह कैसी मूर्खता है कश्यप ।"

कश्यप ने अपनी पत्नी की कही बातें दुहरायीं । वनदेवी ने ताली बजायी तो बतख ग़ायब हो गयी और उसकी जगह पर मिट्टी का एक कुल्हड़ प्रत्यक्ष हुआ ।

"देखो तुम्हें अक्षयपात्र दे रही हूँ । तुम और तुम्हारी पत्नी जो भी भोजन-पदार्थ चाहोगे, यह कुल्हड़ देता रहेगा । इन हरे पेड़ों को जीवित छोड़ो" देवी ने कहा और अदृश्य हो गयी ।

कौसल्या अक्षयपात्र को देखकर ख़ुशी से फूल उठी । अब उनके घर पैसे देकर खाने केलिए बहुत-से लोग आने-जाने लगे । जो जो पुछते, कश्यप छिपाके अक्षयपात्र से निकालता और उन्हें कौसल्या को देता जाता था । वह ग्राहकों को परोसती और खाने के बाद उनसे पैसे वसूल करने लगी ।

पंद्रह दिनों के अंदर ही कौसल्या इस काम से तंग आ गयी, ऊब गयी तो उसने अपने पति से कहा "परोसने का भी कोई समय नहीं रहा । जब देखो, लोग आते है और खाकर जाते हैं । जूठन के इन पत्तों को उठाती-उठाती मैं थक गयी हूँ । कब तक यह व्यर्थ काम करती रहूँगी । वह देवी तुम्हें मूर्ख बनाकर नचा रही है । कल तुम्हारे साथ मैं भी जंगल आऊँगी ।उस बेकार का कुल्हड़ उसके मुँह पर फेंकेंगे । कल तुम्ही देखना, मैं क्या ले आती हूँ ।" पति पर अपना रोब जमाती हुई कौसल्या झुंझलाती हुई बोली ।

दूसरे दिन अक्षयपात्र को लेकर अपने पति के साथ वह भी जंगल गयी । एक जगह पर पहुँचकर उसने पति को इशारा किया तो वह पेड़ काटने चला ।

"रुक जाओ मूर्ख, अक्षयपात्र पाकर भी तुम तृप्त नहीं हुए? अपनी पत्नी को भी अपने साथ ले आये?" कहती हुई वनदेवी प्रत्यक्ष हुई ।

कश्यप कुछ कहना ही चाह रहा था कि कौसल्या ने दखल देते हुए कहा "हम क्या करें? तुमने मिट्टी का ऐसा कुल्हड़ मेरे पति को दिया है कि मैं ना आऊँ तो क्या करूँ? हमें सोने की अशर्फ़ियों से भरी अक्षय थैली दो तो कभी भी इस तरफ़ पटकेंगे भी नहीं । ऐसी निरर्थक वस्तुओं से क्या फ़ायदा?" अक्षयपात्र को नीचे पटकती हुई बोली ।

उस अक्षयपात्र के टुकड़े-टुकड़े हो गये ।सहानुभूति भरी दृष्टि से उसे देखती हुई वनदेवी ने मुस्कुराते हुए कहा "तुम लोगों ने अपने हाथों अपने भाग्य को मिट्टी में मिला दिया है । जो वस्तु मैने तुम्हें दी है, उसे सुरक्षित लौटाओगे तो कोई और वस्तु दे पाऊँगी ।"

कौसल्या नाराज़ी से अपने पति से बोली "वह कुछ भी देने से इनकार कर रही है और तुम गोबर गणेश की तरह खड़े क्यों हो गये? अंधेरा होने के पहले आधा जंगल काट ड़ालो ।"

कश्यप पत्नी का क्रोध देखकर काँप उठा और पेड़ को काटने लगा ।

"इस जंगल में एक भी पेड़ कश्यप काट नहीं पायेगा" कहती हुई वनदेवी अदृश्य हो गयी ।

दूसरे ही क्षण कश्यप के हाथों से कुल्हाड़ी गिर गयी । उसके दोनों हाथ चचींडे की

तरह लटकने लगे । दोनों हाथ निर्जीव हो गये थे ।

कौसल्या ज़ोर–ज़ोर से विलाप करने लगी "माँ, हमें क्षमा कर दो । इतना कठोर दंड मत दो ।"

बहुत रुलाई के बाद भी वनदेवी प्रत्यक्ष नहीं हुई । फिर क्या करते? पति-पत्नी दोनों घर लौटे । कौसल्या को अब भी उम्मीद थी कि वनदेवी प्रत्यक्ष होगी और उन्हें क्षमा कर देंगी । वह जंगल भर रोती-बिलखती घूमती और घर वापस आती । जंगली फल, बबूल की गोंद आदि लाकर गाँव में बेचती । इन्हीं से मिलनेवाले पैसों से वह अपना घर चलाने लगी ।

जंगल से आंम, इमली, आमले के पौधे आदि ले आती और घर के पीछे जो खाली जगह है, वहाँ रोपती । उनके साथ-साथ तरकारियों के पौधे व बीज भी उसने बोये ।

चार सालों के अंदर वे फलने और फूलने लगे । एक दिन आम, इमली आदि गाड़ी में लादकर शहर गयी और उन्हें वहाँ बेचा । बेचने पर जो हज़ार रुपये मिले, उन्हें अपने घर ले आयी ।

रुपयों से भरी थैली अपने पति को दिखाती हुई बोली "वनदेवी ने सचमुच हमारी आँखें खोल दी हैं । पेट भरने के लिए यह कोई ज़रूरी नहीं है कि मनुष्य पेड़ काटे । पेड़ों को बढ़ाकर हम और भी आनंद से जीवन बिता सकते हैं ।इसमें जो तृप्ति है, वह किसी में कहाँ? इस सत्य को हमें वनदेवी ने ही बताया है ।उसके हम आभारी हैं ।" उसकी बातों में सच्ची खुशी थी, आनंद भरा हुआ था ।

इस तथ्य को जानने से उसका प्रायश्चित्त हो गया होगा । शायद इसीलिए हठात् कश्यप के हाथ चंगे हो गये ।

हाथ फैलाकर पैसों की थैली को लेने की चेष्टा करते हुए अपने पति को देखकर कौसल्या के आनंद का आर-पार ना रहा ।उसने कहा "यह निस्संदेह वनदेवी की कृपा ही है ।" कहती हुई अदृश्य उस वनदेवी को दोनों हाथ उठाकर श्रद्धा और भक्ति से प्रणाम किया ।

तीन वर्षीय बुद्धिमान

चंदामामा की खबरें

बालिका मीनाक्षी तीन साल की है। उत्तर प्रदेश के देहरादून के समीप की रैवालन में रहती है। बाल्य चमत्कारों में यह बिलकुल ही नवीन चमत्कार है। वह आसानी से अखबारें पढ़ पाती है। साफ़-सुथरे अक्षरों में वाक्य लिख सकती है। दो अंकवाला गुणा बिना किसी झिझक के कर सकती है। पिता हवलदार पत्रा और माता मंजूषा अपनी बेटी के बुद्धि-कौशल पर बहुत ही प्रसन्न हैं। पर वे दुखी इस बात पर हैं कि हर कोई उसे प्रवेश देने से मना कर रहे हैं। यद्यपि बालिका बुद्धि –संपन्न है, फिर भी वह पाँच साल की भी नहीं है, इसलिए सरकार के नियमों का उल्लंघन करने में स्कूल के अधिकारी अपने को असमर्थ पा रहे हैं। उनका कथन है कि वे घर में उसे पढ़ाने तैयार हैं, लेकिन पढ़ायें भी कैसे? क्योंकि उनकी भी शिक्षा दसवें दर्जे तक ही तो हुई है। वे चाहते हैं कि उनकी बेटी योग्य शिक्षकों से शिक्षा प्राप्त करे।

अपना मांस स्वंय खाया

मेक्सिको के चौदह साल के बालक ने अपने दायें हाथ का मांस खाकर अपनी रक्षा की। बरनाबे अकोस्टा का शरीर बहुत ही तीव्र रूप से जल गया था। अभी तक इस बात का पता नहीं चला कि यह घटना बिजली के गिरने की वजह से हुई या बिजली के तार को छूने से। बहुत दिनों के बाद ही उसके रक्षक आये और तभी उन्हें मालूम हुआ कि अपने दायें हाथ का मांस खाकर उसने अपनी भूख मिटायी, जो दुर्घटना में जल चुका था।

आग से खेल

मोरैन, ओहियो का आस्टिन मेसनर नामक पाँच साल का बालक टी.वी. पर कार्टून फिल्में देखा करता था। एक कार्टून में दिखाया गया था कि दो वयस्क चीज़ों को जलाये जा रहे थेऔर आनंद लूट रहे थे। उसने दियासलाई ली और उसे जलाकर आग से खेलता रहा। उसकी माता ने उसे ऐसा करने से रोका। परंतु वह जलाता ही रहा, जिसकी वजह से उसकी छोटी बहन मर गयी।

सूँघनेवाले कुत्ते ने रक्षा की

अभी हाल ही में महाराष्ट्र में जो भयंकर भूकंप हुआ, मंगरूर नामक एक गाँव में अठारह महीनों की एक छोटी बालिका कूड़े करकट के नीचे दब गयी। वह पूरे चार दिन उन के नीचे पड़ी रही। ३८ सदस्यों का, फ़्रांस के एक रक्षा-दल ने सुडकनेवाले कुत्ते से पता लगायां कि नीचे कोई मानव पड़ा हुआ है। आठ फीट के कूड़े को उस दल ने खोदा तो वहाँ एक बेहोश बालिका को पाया।

भाग्य की लीलाएँ

एक गाँव में एक किसान के पास संजीवी नामक एक लड़का काम करता था। वह उसके बैलों, गायों और भैसों की देखभाल करता था। वह हर रोज़ सबेरे उठता और अपने मालिक के घर के काम-काज करता रहता था। फिर बासी खाना खाता और पशुओं को चराने निकल जाता था।

गाँव के बाहर उजड़ा हुआ बाग़ था। एक समय था जब कि उसमें तरह–तरह के पेड़ थे और फल भी। पर अब उसकी देख–रेख करनेवाला कोई नही रहा। बाग़ भर में बेकार के पौधे उग आये थे। घास भी बहुत ही उग आयी थी। जहाँ देखो, वहाँ फैली हुई थी। उसमें पशुओं को ले जाकर कोई चराये भी तो पूछनेवाला कोई भी नहीं था। पशुओं को लाकर चरानेवाले लड़के वहाँ के पैड़ों पर चढ़ते और फल तोड़कर खाते रहते थे। संजीवी भी अन्य बालकों के साथ पशुओं को चराने उसी बाग़ में आया करता था। पशु घास चरते रहते थे और बालक शाम तक खेलते रहते थे। जब अंधेरा हो जाता, गाँव लौटते थे।

एक दिन संजीवी पशुओं को चराने रोज़ जैसे आता था, वैसे ही वहाँ आया। उस दिन त्योहार था, इसलिये बाक़ी लड़कों में से कोई नहीं आया। संजीबी जानता नहीं था कि आज त्योहार का दिन है। अकेले उसका दम घुटने लगा। कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। अपनी झल्लाहट उसने पशुओं पर दिखायी। उन्हें पीटता रहा और चरने नहीं दिया। इधर से उधर उन्हें बेकार दौड़ाता रहा।

संजीवी पर अचानक एक ततैया आ गिरा। जैसे ही उसने देखा कि वह उस पर आ गिरा है तो तुरंत उसने उसे मार ड़ाला। तब भी उसका मन शांत नहीं हुआ तो उसके

रमा चौहाण

शरीर के दो टुकड़े किये । उन टुकड़ों को दूर फेंक दिया । वे एक झाड़ी पर जा गिरे । तुरंत उस ततैये में जान आ गयी और वह उड़ कर चला गया ।

संजीवी इस चमत्कार को देखकर हक्का बक्का रह गया । ततैया के टुकड़े जहाँ गिरे, वहाँ जाकर ध्यान से देखा । वह एक नाटी और छोटी झाड़ी पर गिरा था । वह झाड़ी पत्तों से भरी हुई थी । वे पत्ते साधारण पत्तों के आकार के ना होकर कुछ अलग ही से थे । वे पत्ते बहुत ही कोमल भी थे । उसे लगा कि इन पत्तों की महिमा के कारण ही मरे ततैये में जान आ गयी है । संजीवी पौधों और पत्तों के बारे में सुन चुका था, इसलिये उसने सोचा कि यह अवश्य संजीवनी ही होगी, जो मरे हुए को जिलाता है । उस जगह को उसने ग़ौर से देखा और याद रखा ।

संजीवी को उस संजीवनी के पौधे पर संपूर्ण विश्वास नहीं हुआ । वह सोचने लगा कि जो उड़कर चला गया वह मरा हुआ ततैया ना हो, कोई दूसरा ततैया हो । उसने पूरा बाग़ छान डाला और मरी हुई एक टिड्डी का शरीर ले आया । उसने धीरे से उसे संजीवनी के पौधे पर रखा । एक क्षण में उस में जान आ गयी और देखते—देखते ग़ायब हो गयी ।

संजीवी को अब यह पक्का विश्वास हो गया कि यह अवश्य ही संजीवनी का पौधा है और इसे छूने पर मरा हुआ कोई भी प्राणी पुनः जीवित हो उठेगा । वह आतुर

था कि कब यह बात दूसरे लड़कों को बताऊँ ।

दूसरे दिन जब सब बालक पशुओं को बाग़ की तरफ़ ले आ रहे थे तो उसने उनसे बताया कि मैने संजीवनी पौधे को खोज निकाला है और उसकी शक्ति से मरे हुए ततैये तथा टिड्डी में प्राण आ चुका है । तो वे सब उसका मज़ाक उड़ाने लगे । उसकी हँसी उड़ाकर उसे रुलाने लगे । उनके इस हँसी—मज़ाक से वह उनपर नाराज़ हो गया और रहस्य को रहस्य ही रहने दिया ।

कुछ दिन गुज़र गये । एक दिन सवेरे उस गाँव के मुखिये की मौत हो गयी । वह मुखिया धनिक था, साथ ही बड़ा दानी भी । इसलिए गाँव के लोग उसे भगवान

मानते थे ।

वह महीने भर बीमार रहा और फिर मर गया । महीने भर वैद्यों ने उसकी खूब चिकित्सा की । लेकिन किसी का भी प्रयत्न सफल नहीं हुआ ।

सवेरे मुखिया के घर के सामने भीड़ जमा हो गयी ।कुछ लोग मुखिये की तारीफ़ कर रहे थे तो कुछ लोग कह रहे थे कि जो जन्मा है, उसे तो मरना ही है । शास्त्री कह रहे थे कि वैद्य दवाएँ तो दे सकते हैं, किन्तु प्राण कहाँ से देंगे?

मुखिये की मौत का समाचार संजीवी के कानों में पड़ा । उस समय पशुओं को चराने उस रास्ते से वह बाग़ की तरफ़ जा रहा था । जो हुआ, मालूम होने के बाद उसने कहा "मुखिये को फिर से ज़िन्दा करने का उपाय मैं बताऊँगा । उजड़े हुए उस बाग़ में संज़ीवनी का पौधा है ।" यों उसने अपना अनुभव वहाँ उपस्थित लोगों से बताया ।

संजीवी आगे-आगे और ग्रामीण पीछे-पीछे जाने लगे । उसे मालूम था कि वह झाड़ी कहाँ है । क़रीबन रोज़ एक दो बार ही सही, उसे देखता रहता था । इसीलिए वह सीधे वहीं गया । लेकिन ताज्जुब कि आज वह पौधा और पत्ते उसे वहाँ दिखायी नहीं पड़े । वह भी संदेह में पड़ गया और सब झाड़ियों को देखता गया ।

ग्रामीण उससे नाराज़ हो गये । एक तरफ़ वे उसे गालियाँ देने लगे तो दूसरी तरफ़ पौधे के दिखायी ना पड़ने से उसे बहुत ही दुख हुआ । पंद्रह-बीस बार वह बाग़ में घूमता रहा, झाड़ी की खोज करता रहा, परंतु वह झाड़ी दिखायी नहीं पड़ी ।

गाँव का मुखिया जो मर गया, उसके भाग्य में फिर से जीवित होने का भाग्य बदा नहीं, इसीलिए संजीवनी सामने होते हुए भी संजीवी को दिखायी नहीं पड़ा । हाँ, भाग्य की लीलाएँ विचित्र ही होती हैं ।

—२५ वर्षों के पहले चंदामामा में प्रकाशित कहानी

प्रकृतिः रूप अनेक

साँप धीरे-धीरे रेंगते हैं

यह तो केवल मिथ्या भरी कल्पना है कि साँप तेज़ी से चलते हैं। सच तो यह है कि वे बहुत ही धीरे-धीरे रेंगते हैं। हाँ, जब कि खाने की वस्तु को पकड़ने के लिए जाते हैं तो तेज़ी से चल पड़ते हैं। भूमि पर चलनेवाले साँपों में से काला साँप घंटे में दस मील की रफ्तार से रेंगता है। ये साँप सब साँपों में से तेज़ी से रेंगता हुआ जाता है।
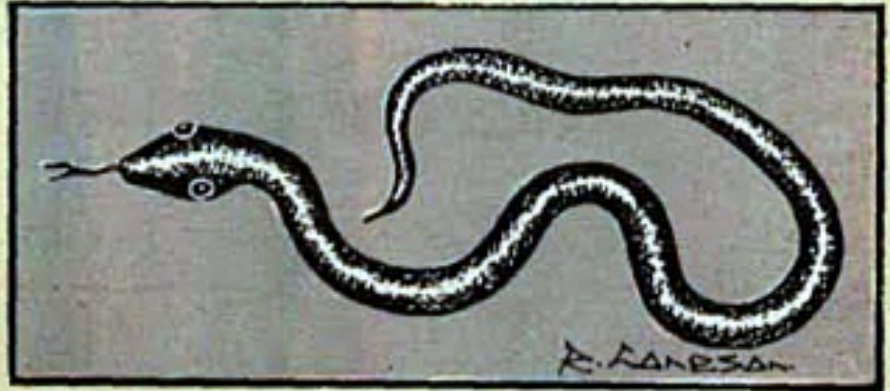
आलू में से अंकुर

पक्का आलू कुछ दिनों के लिए कहीं रख दिया जाए तो उसमें छोटे-छोटे छेद हो जाते है और उनसे अंकुर उग आते हैं। उन अंकुरों को पर्याप्त मात्रा में, खाद्य पदार्थ उन आलुओं से ही प्राप्त होते हैं, जिससे वे क्रमशः बढ़ते जाते हैं।
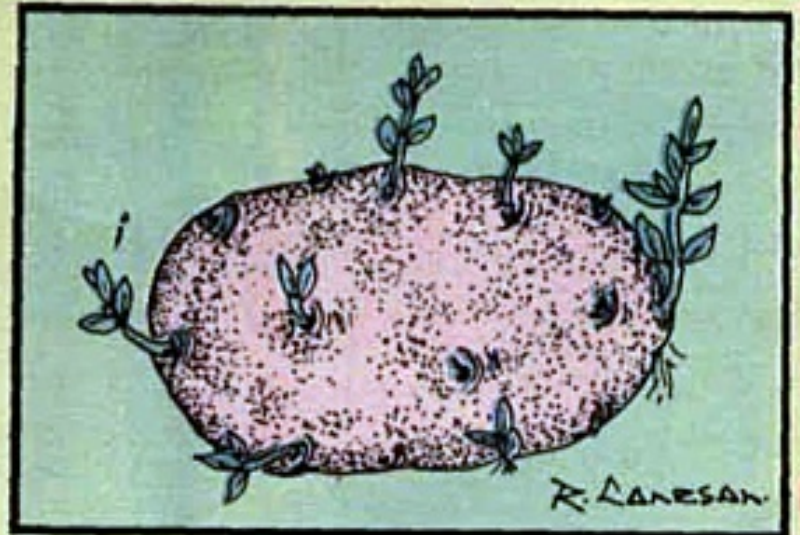
उड़नेवाला 'सियार'

चमगीदड़ बहुत छोटे होते हैं। उनके सिर छोटे चूहों के सिर जैसे होते हैं। लेकिन 'कबोद' पक्षी जैसे चमगीदड़ का सिर सियार के सिर के जैसे होता है। इसलिए उन्हें उड़नेवाले 'सियार' कहते हैं। ये चमगीगड़ छोटे कुत्तों के परिमाण में होते हैं। इनके पंखों की चौड़ाई छह फुट की होती है। मामूली छोटे चमगीदड़ों की आवाज़ के आधार पर ये उड़ने लगते हैं। परंतु, ये उड़नेवाले 'सियार' अच्छी तरह देख पाते हैं। ये 'सियार' हमारे देश में भी कहीं कहीं हैं।
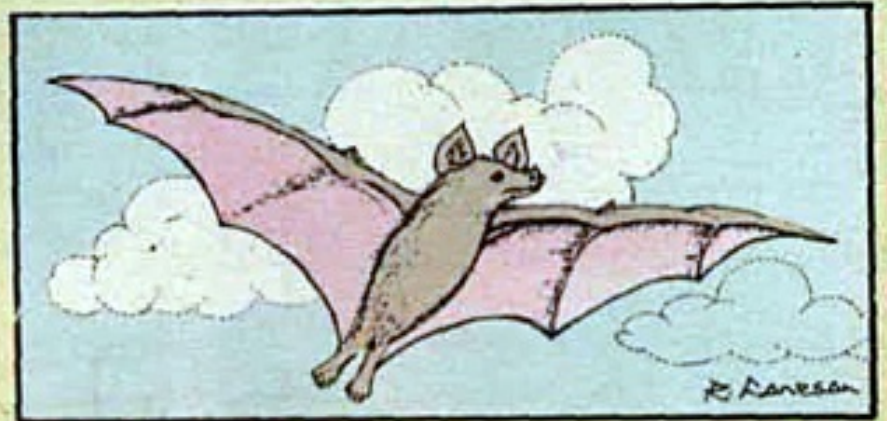
Say "Hello" to text books and friends
'Cause School days are here again
Have a great year and all the best
From Wobbit, Coon and the rest!
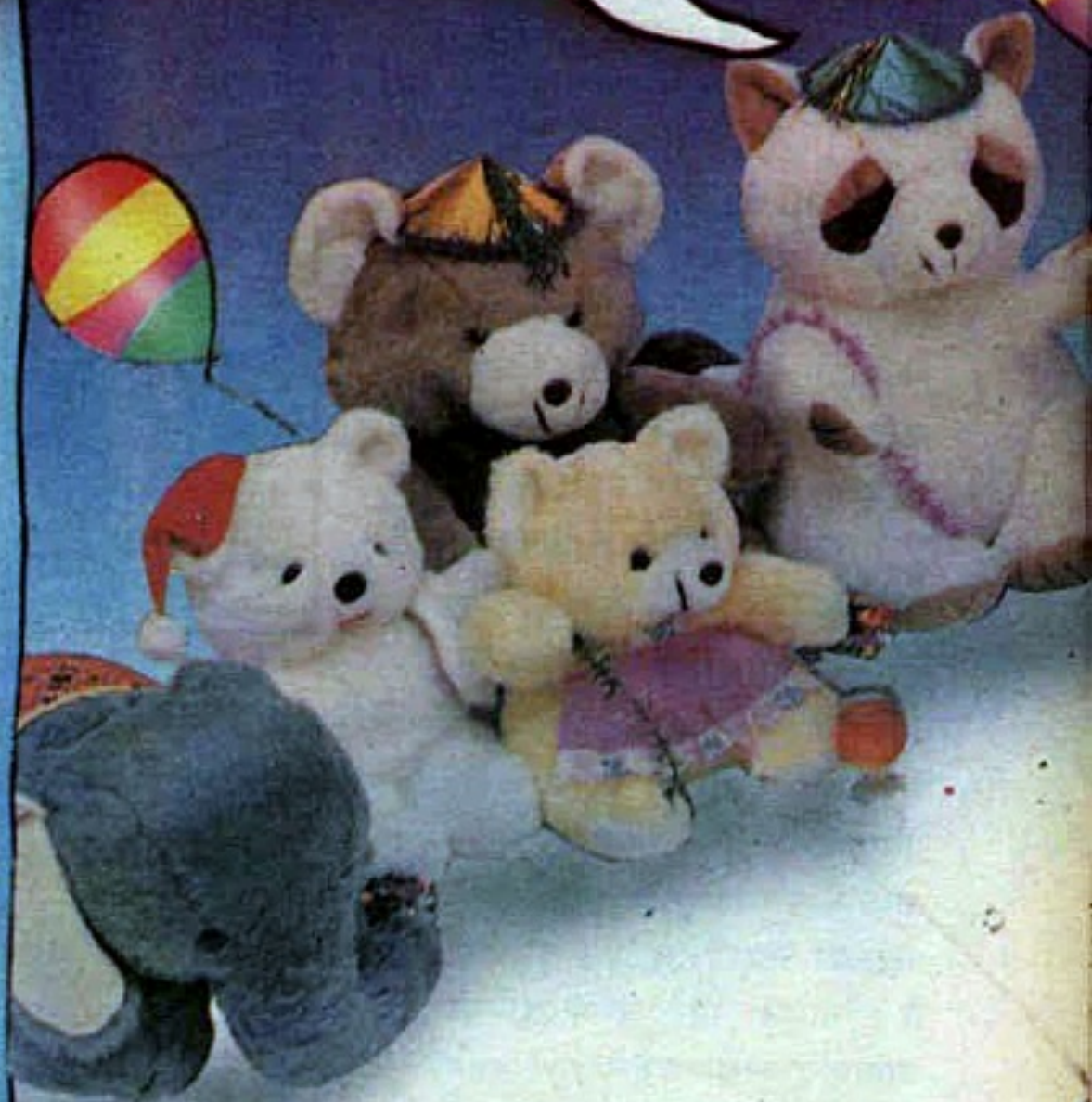
SUPER
RUBBER
It's time to go back to school again. Time for text
books. Time for games. Time to meet old friends.
And make new ones. Time to start studying
again. Because there's so much to learn about
the world around you.
From all of us here at Chandamama, have a
great year in school. And remember to tell u
what you've learnt everyday, when you
come home from school !
THE
CHANDAMAMA
COLLECTION

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ मार्च, १९९४ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

Anant Desai

S. B. Prasad

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★१० जनवरी '९४ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियाँ को मिलाकर) रु. १००-/ का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें : **चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.**

नवंबर १९९३, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **खाऊँ खीर-मलाई प्यारी!**

दूसरा फोटो : **प्यार की मिठास भी न्यारी!!**

प्रेषक : अर्चना कासबी c/o Sri Shailendra Kasabi
State Bank of India, Ordnance Factory Branch, Katni P.o Madhya Pradesh

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु ४८/-

चन्दा भेजने का पता :
डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी,
मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.
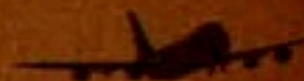
CHANDAMAMA (Hindi) January 1994 Regd. No. M. 5452